



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

5/2/99
Hed

सं. 253]
No. 253]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 18, 1998/कार्तिक 27, 1920
NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 18, 1998/KARTIKA 27, 1920

वाणिज्य मंत्रालय

(पाठनरोधी तथा सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 नवम्बर, 1998

अंतिम जांच परिणाम

विषय : रूस कजाकिस्तान तथा उक्रेन से हॉट रोल्ड कॉयल्स/शीद्युस/प्लेट्स/स्ट्रॉप्स के आधारों के बारे में पाठनरोधी जांच-अंतिम जांच परिणाम

14/1/97-ए डी डी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (डम्प की गई वस्तुओं की पहचान, उन पर पाठनरोधी शुल्क का आकलन तथा संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियम, 1995 को देखते हुए :

(क) प्रक्रिया

1. जांच के संबंध में निम्नलिखित क्रियाविधि का पालन किया गया है :—

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके पश्चात प्राधिकारी कहा जाएगा) ने दिनांक 17 जून, 1998 की अधिसूचना द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम को अधिसूचित किया और हितबद्ध पक्षों से अनुरोध किया कि इसके प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित रूप से अपने विचार भिजावा दें।
- (ii) प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को प्रारंभिक निष्कर्ष की प्रति भिजावाई जिनसे अनुरोध किया गया कि इस पत्र की तारीख के आलीस दिनों के भीतर प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में अगर उनके कोई विचार हों, तो उन्हें भिजावा दिया जाए।
- (iii) प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्ष की एक-एक प्रति रूस, कजाकिस्तान तथा उक्रेन के नई दिल्ली स्थित दूतावासों को भी इस अनुरोध के साथ भिजावाई कि नियांतकों और अन्य इच्छुक पार्टियों को प्रारंभिक निष्कर्ष के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करने की सलाह दी जाए।
- (iv) प्राधिकारी ने सभी इच्छुक पार्टियों को 4 जुलाई, 1998 को मौखिक रूप से अपने विचार व्यक्त करने का मौका दिया। मौखिक विचार व्यक्त करने वाली पार्टियों से अनुरोध किया गया कि मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाए। पार्टियों को सलाह दी गई कि वे विवेची पक्ष द्वारा प्रकट किए गए विचारों की प्रतियां प्राप्त कर लें और उनका खंडन, अगर कोई हो, प्रस्तुत करें। अनेक इच्छुक पार्टियों ने सुनवाई में भाग लिया।
- (v) केन्द्रीय सरकार द्वारा बढ़ाई गई समय-सीमा के भीतर ही जांच पूरी की गई है। एक वर्ष की समय-सीमा 5 अक्टूबर, 1998 को समाप्त हो गई थी जिसे केन्द्र सरकार ने तीन महीने के लिए और बढ़ा दिया था और इस जांच कार्य को पूरा करने की बढ़ाई गई अवधि 5 जनवरी, 1999 को समाप्त होगी।

(viii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के गैर-गोपनीय अंश हस्ताक्षर पक्षों को देखने के लिए उपलब्ध कराए जिन्हें सार्वजनिक फाइलों के रूप में रखा गया था।

(ix) प्रारंभिक निष्कर्षों की घोषणा करने से पूर्व हितबद्ध पक्षों द्वारा दिए गए तर्क, जिन्हें प्रारंभिक निष्कर्षों में प्रकाशित किया गया, उन्हें संक्षिप्तता की दृष्टि से दोहराया नहीं गया है। तथापि हितबद्ध पक्षों द्वारा डाये गये मुर्दों पर प्रारंभिक निष्कर्षों और/या इन निष्कर्षों में सम्मुचित रूप से विचार किया गया है।

(x) नियम 16 के अनुसार जिन आवश्यक तथ्यों/आधारों पर विचार किया गया उनकी जानकारी हितबद्ध पक्षों को दी गई थी और उसके बारे में प्राप्त इष्टप्रियों पर इन निष्कर्षों में यथोचित रूप से विचार किया गया है।

(ख) याचिकाकर्ताओं, नियांतकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार और प्राधिकारी द्वारा उनकी जांच

2. विचाराधीन उत्पाद पर याचिकाकर्ताओं, आयातकों, नियांतकों, तथा अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा व्यक्त किए गए विचार, याचिका दायर करने के लिए याचिकाकर्ताओं की हैसियत, समान वस्तु, घरेलू उद्योग, पाटन, क्षति, कारणात्मक संबंधों पर भी दी दिए गए पैराग्राफों में विचार किया गया है:—

3. हितबद्ध पक्षों द्वारा दिए गए तर्कों की जांच की गई; उन पर विचार किया गया और जहां उचित समझा गया, उन पर नीचे संबंधित पैराग्राफों में विचार किया गया है।

(ग) विचाराधीन उत्पाद

4. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद रूप, कलाकिसान तथा लक्जेन मूल के अथवा वहां से निर्यातित हॉट रोल्ड कॉयल्स, हॉट रोल्ड शीट्स, हॉट रोल्ड प्लेट्स तथा हॉट रोल्ड स्ट्रिप्स हैं, जिन्हें अध्याय 7208 के अंतर्गत घोषित किया गया है। प्रत्येक वस्तु को इस जांच में हॉट रोल्ड उत्पाद के रूप में वर्णित किया जा रहा है।

5. कुछेक हितबद्ध पक्षों द्वारा तर्क दिया गया है कि प्रत्येक हॉट रोल्ड कॉयल्स, शीट्स, प्लेट्स तथा स्ट्रिप्स भिन्न-भिन्न मर्दें हैं और प्राधिकारी को चाहिए कि इस जांच में इन्हें एक साथ नहीं मिलाया जाए। इस बात पर भी तर्क किया गया है कि बॉयलर अवालिटी प्लेट्स को मौजूदा जांच के कार्यक्षेत्र से बाहर कर दिया जाना चाहिए क्योंकि काफी अधिक निर्यात कीमत को ध्यान में रखते हुए इन मर्दों का न तो भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादन किया जा रहा है और न ही घरेलू उद्योग को यह क्षति पहुंचा रही है। जैसा कि प्रारंभिक निष्कर्षों में भी बताया गया है, प्राधिकारी ने प्रत्येक हॉट रोल्ड उत्पाद को एक अलग उत्पाद माना है। प्राधिकारी ने इन हॉट रोल्ड उत्पादों के आयातों के विरुद्ध जांच संयुक्त रूप से एक ही प्रकार से मात्र इसलिए शुरू की है क्योंकि यह जांच एक से अधिक देशों से किए गए आयातों के विरुद्ध शुरू की गई है, क्योंकि याचिकाकर्ताओं ने उन सभी उत्पादों पर पाटन का आरोप लगाया है और इन प्रत्येक मर्दों के लिए उत्पादन प्रक्रिया एक निश्चित चरण तक काफी कुछ एक जैसी है। इन उत्पादों को आणिंजिक रूप से सामूहिक तौर पर हॉट रोल्ड उत्पादों के रूप में जाना जाता है। हॉट रोल्ड शीट्स, प्लेट्स अथवा स्ट्रिप्स में सिर्फ कुछेक अतिरिक्त उत्पादन प्रक्रिया शामिल है। कॉयल्स का इसेमाल स्ट्रिप्स, प्लेटों अथवा शीटों का निर्माण करने के लिए किया जा सकता है। इन हॉट रोल्ड उत्पादों के अलग-अलग होने का महत्व केवल उचित सार्वजनिक तथा क्षति मार्जिन का निर्धारण करने की दृष्टि से ही है। प्राधिकारी ने पाटन अथवा क्षति का निर्धारण करने के प्रयोजन के लिए प्रत्येक हॉट रोल्ड उत्पाद को उन नियांतकों के लिए एक अलग मद माना है जिन्होंने आवश्यक जानकारी अलग-अलग प्रस्तुत की है। यदि नियांतक ने मिश्रित सूचना प्रस्तुत की है तो प्राधिकारी के सामने इसके अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था कि वह उक्त नियांतक का सामूहिक रूप से मूल्यांकन करे। प्राधिकारी ने केवल क्षति का मूल्यांकन करने के प्रयोजन से इन आरोप उत्पादों को इकट्ठा किया है, जैसा कि प्रारंभिक निष्कर्षों में क्षति से संबंधित पैराग्राफ में कारण बताया गया है।

6. जहां तक बॉयलर अवालिटी प्लेट्स का संबंध है (जिन्हें भी क्यू प्लेट्स भी कहा जाता है) यह तर्क दिया गया है कि निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए इन्हें मौजूदा जांच के कार्य क्षेत्र से हटाया जाए :

(क) एच आर प्लेट्स विशेष रूप से भी क्यू प्लेट्स का मूल्य कॉयल, शीट्स तथा स्ट्रिप्स के मूल्य की तुलना में काफी अधिक है।

(ख) प्लेट्स और विषेश रूप से भी क्यू प्लेट्स के उत्पादन की लागत कॉयल, शीट्स तथा स्ट्रिप्स की लागत से काफी अधिक है।

(ग) रसायनशास्त्र, ग्रेन रिफाइनमेंट, यांत्रिकी गुण, परीक्षण संबंधी आवश्यकताओं तथा कार्य निष्पादन संबंधी मानकों की दृष्टि से भी भी क्यू प्लेट्स सामान्य प्लेटों से काफी भिन्न होती है।

(घ) भारतीय उद्योग द्वारा भी क्यू प्लेटों का उत्पादन नहीं किया जा रहा है।

उपयुक्त को ध्यान में रखते हुए यह तर्क दिया गया कि भी क्यू प्लेटों को मौजूदा जांच के दायरे से अलग रखा जाना चाहिए।

प्राधिकारी की स्थिति

7. हालांकि यह सच है कि भी क्यू प्लेटों सामान्य एच आर प्लेटों से भिन्न होती हैं लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सामग्री की मूल विशेषताएं वही रहती हैं अर्थात् वी क्यू प्लेट्स भी हॉट रोल्ड उत्पाद हैं। जहां तक भारत में भी क्यू प्लेट्स के उत्पादन का संबंध है, प्राधिकारी ने नोट किया है कि जो नियांतक तथा आयातक स्वयं ऐसी प्लेटों को जांच के दायरे से बाहर रखना चाहते हैं उन्होंने साक्ष्य संलग्न किया है कि भारत में इन प्लेटों का उत्पादन किया जा रहा है। केवल उत्पादन की लागत अथवा कीमतों में अंतर होने से ही इन दोनों उत्पादों को भिन्न नहीं माना जा सकता है। इसमें तुलना के प्रयोजन के लिए कीमत समायोजन की जरूरत है। अतः प्राधिकारी का मत है कि जो नियांतक अथवा नियांतक सम्बद्ध देशों से आयातित भी क्यू प्लेटों की जांच में शामिल न करने की मांग कर रहे हैं, वे अपने इस दावे को साखित करने में असफल रहे हैं कि समान वस्तु का उत्पादन भारत में नहीं किया

जा रहा है। अतः जी क्यूं स्टॉटें को जौजूदा जांच के दायरे से निकालना उचित नहीं होगा। तथापि प्राधिकारी ने इन्हें समान वस्तु मानते हुए डम्पिंग मार्जिन तथा क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए तुलना की है।

याचिकाकर्ता, घरेलू उद्योग तथा समान वस्तुएं

8. यह याचिका मैसर्स स्टील अधारिटी ऑफ इंडिया लि. (सेल) तथा ईस्सर स्टील लि. (इस अधिसूचना में जिसका उल्लेख ईस्सर के रूप में हुआ है) द्वारा दायर की गई है और जिसका समर्थन मैसर्स टाटा आयरन एंड स्टील कं. लि. (टिस्को) तथा लायईस स्टील इंडस्ट्रीज लि. ने किया है। भारत में संबद्ध वस्तुओं के और उत्पादक नहीं हैं। अतः याचिकाकर्ता जौजूदा याचिका को दायर करने की आधारभूत शर्तें जो पूरा करते हैं।

9. ये तर्क भी दिए गए हैं कि टिस्को और ईस्सर नियम 2 (ख) के अर्थ में संबंधित कंपनियां हैं। इसलिए घरेलू उद्योग के दायरे में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। तथापि प्राधिकारी ने नोट किया है कि किसी भी हितबद्ध पक्ष ने इस आयात के प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में कोई विवाद नहीं किया है कि यह प्रभागिक काले के लिए कोई साक्ष्य नहीं है कि ईस्सर स्टील को निर्यातित करती है अथवा स्टीलको ईस्सर को निर्यातित करती है अथवा इन दोनों को कोई तीसरी कंपनी निर्यातित करती है। तथापि टिस्को के संबंध में प्राधिकारी ने नोट किया है कि टाटा एस एल टिस्को की सहायक कम्पनी है। टिस्को टाटा एस एल को निर्यातित करने की स्थिति में है और इसलिए घरेलू उद्योग के क्षेत्र के दायरे से आहर कर देना चाहिए।

10. उत्पादन : भारत में संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादन का बड़ा हिस्सा सेल तथा ईस्सर द्वारा उत्पादित होता है। अतः सेल तथा ईस्सर नियम 2(ख) के अर्थ में घरेलू उद्योग है।

11. समान वस्तु के संबंध में तर्क दिया गया है कि प्रत्येक हॉट रोल्ड उत्पाद किसी भी अन्य हॉट रोल्ड उत्पाद के समान वस्तु नहीं हैं। यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित किए जा रहे हॉट रोल्ड उत्पादों में से प्रत्येक उत्पाद संबद्ध देशों के मूल के या वहां से आयात किए जा रहे हॉट रोल्ड उत्पाद के समान वस्तु हैं। उदाहरणार्थ यह तर्क दिया गया है कि हॉट रोल्ड प्लेट हॉट रोल्ड काइल्स के समान वस्तु नहीं हैं और संबद्ध देशों से निर्यातित हॉट रोल्ड काइल्स घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित हॉट रोल्ड काइल्स के समान वस्तु नहीं हैं। प्राधिकारी स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान जांच में केवल इन हॉट रोल्ड उत्पादों को एक साथ लेने का अर्थ यह नहीं है कि प्राधिकारी ने यह विवाद कर लिया है कि या तो पाटन मार्जिन या फिर क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए हॉट रोल्ड काइल्स हॉट रोल्ड प्लेट के समान वस्तु हैं। उन निर्यातकों, जिन्होंने इन उत्पादों के संबंध में इस्पात करमत जैसे जिन निर्यातकों ने अलग सूचना भेजी है, उनका भिन्न-भिन्न उत्पादों के लिए अलग से निर्धारण किया गया है। तथापि, ऐसी स्थिति में, जहां किसी निर्यातक ने संगत सूचना अलग से नहीं भेजी है वहां प्राधिकारी भिन्न-भिन्न वस्तुओं के लिए अलग-अलग डम्पिंग मार्जिन का निर्धारण नहीं कर सका है, भले ही प्राधिकारी ने प्रत्येक प्रकार/प्रेणी के लिए अलग सूचना देने का अनुरोध किया हो।

12. इन तर्कों के संबंध में कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित प्रत्येक हॉट रोल्ड उत्पाद संबद्ध देशों से निर्यातित हॉट रोल्ड उत्पादों के समान वस्तु नहीं हैं, प्राधिकारी यह भी करते हैं कि हितबद्ध पार्टीयों में से किसी ने यह प्रदर्शित नहीं किया है कि जहां तक संबद्ध वस्तुओं की भौतिक विशेषताएं (आकार, रसायनिक संरचना, कच्ची सामग्री), विशिष्टाण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत-निर्धारण, वितरण एवं विषयन तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसे मापदण्डों का संबंध है, दोनों समान वस्तुएं नहीं हैं। इन मापदण्डों पर विवाद करते हुए प्राधिकारी को यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित माल और संबद्ध देशों से निर्यातित माल की विशेषताएं इन पैरामीटरों के संदर्भ में एक-दूसरे से काफी मिलती जुलती हैं और इस बात के पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं कि दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक दृष्टि से प्रतिस्थापनीय हैं और उपभोक्ताओं द्वारा इनका एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया गया है।

13. पूर्वोक्त को देखते हुए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित प्रत्येक हॉट रोल्ड उत्पाद अर्थात् हॉट रोल्ड कॉइल्स, हॉट रोल्ड शीट्स, हॉट रोल्ड प्लेट्स और हॉट रोल्ड स्ट्रिप्स पर नियम 2 (घ) के अर्थ के भीतर संबद्ध देशों के मूल के या वहां से निर्यातित या आयातित क्रमशः हॉट रोल्ड कॉइल्स, हॉट रोल्ड शीट्स, हॉट रोल्ड प्लेट्स, और हॉट रोल्ड स्ट्रिप्स के समान वस्तुओं के रूप में विवाद किया जा रहा है। प्राधिकारी घरेलू उद्योग और समान वस्तुओं के संबंध में प्रारम्भिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं और यह पुष्टि करते हैं कि सेल और ईस्सर वर्तमान जांचों के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग हैं और यह भी कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित माल विचाराधीन उत्पादों के समान वस्तुएं हैं।

(ध) पाटन

14. पृथक पाटन मार्जिनों के निर्धारण के लिए निम्नलिखित निर्यातकों का पृथक निर्धारण किया गया है:

- (क) इस्पात करमत
- (ख) जेएससी सेवस्टर्ट
- (ग) शोवालिप्स्टस्क आइरन एंड स्टील कॉरपोरेशन
- (घ) जेपोरिश्स्टाल ज्वॉयंट-स्टॉक कं.
- (ङ) एजोपस्टल आइरन एंड स्टील वर्क्स
- (च) मेनिन्टोगोस्क मेटैलर्जिक प्लांट

15. उपरोक्त निर्यातकों द्वारा भेजी गई सूचना के आधार पर प्रारम्भिक निर्धारण के समय पाटन निर्धारित किया गया था। नोबोलिप्स्टस्क आइरन एंड स्टील कारपोरेशन और जेपोरिश्स्टाल ज्वॉयंट-स्टॉक कं. के अलावा किसी भी निर्यातक ने पाटन के अनन्तिम निर्धारण का प्रतिवाद

नहीं किया। परन्तु, इन नियांतकों के एक प्रतिविधि ने प्रारम्भिक निष्कर्षों में पाटन और पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई कार्य-प्रणाली पर विस्तृत विचार विमर्श किया था। विचार विमर्श के बाद इन नियांतकों ने प्राधिकारी द्वारा प्रारम्भिक निष्कर्षों में अपनाई गई कार्य-प्रणाली पर प्रतिवाद भर्ही किया है। इसलिए इन नियांतकों के बारे में पाटन के संबंध में प्रारम्भिक निष्कर्षों की पुष्टि की जाती है।

16. इस्पात करमत के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि वाधिकार्ताओं ने इस्पात करमत के इस दावे का विरोध किया है कि व्यापार के सामान्य रूप में घरेलू बिक्रियां हुयी हैं, जबकि नियांतक ने इसे यह तर्क देते हुए प्रमाणित करने का अनुरोध किया है कि कंपनी ने लाभ कमाए हैं और घरेलू बाजार में बिक्रियां भारत को हुए नियांत के 200% से अधिक की हैं। वाधिकार्ताओं ने उल्लेख किया है कि इस्पात करमत के इस दावे का विरोध किया है कि व्यापार के सामान्य रूप में हुयी है क्योंकि नियांतक ने लाभ कमाया है और विक्रियां पर्याप्त मात्रा में हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बाजार में इस्पात करमत की कुल बिक्री -----मी. टन की थी और भारत को हुए कुल नियांत -----मी. टन के थे। नियांतक ने भारत को किए गए सभी नियांतों की औसत बिक्री कीमत के आधार पर नियांत कीमत का दावा किया है, जबकि घरेलू बाजार में बिक्री-कीमत के बल -----मी. टन पर आधारित है जो कुल घरेलू बिक्रियों की 5.49% है। बिक्री-कीमत के निर्धारण के लिए कंपनी द्वारा की गई विभिन्न बिक्रियों के लिए कंपनी द्वारा कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। इसलिए घरेलू बाजार में बिक्रियां भारत को हुयी नियांत बिक्रियों की 200% नहीं हैं जैसाकि नियांतक द्वारा दावा किया गया है। तथापि, घरेलू बाजार में बिक्री कीमत -----मी. टन पर आधारित है जो भारत को हुए नियांतों की 13.84% है। इसलिए घरेलू बाजार की बिक्रियां पर्याप्त मात्रा में हैं। इस्पात करमत द्वारा कमाए गए लाभों और नकारात्मक साख के कारण नियांतक द्वारा किए गए समायोजन के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि नकारात्मक साख अधिगृहीत परिस्थितियों का उचित मूल्य-अधिग्रहण की सागत से अधिक होने के कारण बनी। कंपनी ने इस ओर दर्शाई गई आय के बराबर की राशि से अधिक का मूल्यांकन प्रभारित किया है। उपरोक्त को देखते हुए प्राधिकारी इस्पात करमत के संबंध में पाटन मार्जिन संबंधी प्रारम्भिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं।

17. रूस की जो एस सी सेवर्स्टल के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बाजार में कंपनी की बिक्री कुल बिक्री की लगभग 15.85% है। यद्यपि, बिक्री पर्याप्त मात्रा में हुयी है तथापि, कम्पनी द्वारा इस बात की पुष्टि नहीं की गयी है कि वह उत्पादन सागत से अधिक पर की गयी है। कंपनी ने दावा किया है कि उसने 1996 और 1997 की पहली तिमाही में लाभ कमाया है। परन्तु, कंपनी ने संगत अंवधि में उसके द्वारा उत्पादित और बिक्री की गई विभिन्न मर्दों के विवरण नहीं दिए हैं और उसके द्वारा दी गई सूचना से यह स्पष्ट नहीं है कि कंपनी अंनन्य रूप से हॉट रोल्ड उत्पादों की बिक्री और उत्पादन संबंधी कार्यकलाप कर रही है या नहीं। इसे देखते हुए उन कीमतों के आधार पर जिन पर कंपनी द्वारा माल बेचा गया है, सामान्य मूल्य का निर्धारण करना व्यावहारिक नहीं है।

18. धारा 9क(1)(ग) के अन्तर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है व्यापार के सामान्य रूप में समान वस्तु का तुलनात्मक मूल्य जब उक्त वस्तु नियांतक देश या क्षेत्र में खपत के लिए हो। यद्यपि उन कीमतों, जिन पर कंपनी द्वारा अपने घरेलू बाजार में माल बेचा गया है, पर आधारित सामान्य मूल्य निर्धारित करना अधिक उपर्युक्त होगा, तथापि सामान्य मूल्य वह कीमत है जिस पर माल नियांतक देश में खपत के लिए बेचा जाता है इसलिए अब भी यह उचित होगा यदि उन कीमतों, जिन पर माल नियांतक के घरेलू बाजार में खपत के लिए बेचा गया है, पर आधारित सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाए, विशेषकर उस स्थिति में जब कंपनी द्वारा निर्धारित समय-सीमा के भीतर अपर्याप्त सूचना भेजी गई हो और जो अन्य सहयोगी नियांतकों के प्रति उचित और निष्पक्ष हो। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रत्युत्तर में पार्यी गयी कमियां उस सूचना के स्वरूप में हैं जिसे नियांतक ने जानबूझकर प्रस्तुत नहीं किया है और जो स्पष्ट रूप से भूलवश किया गया कार्य नहीं है।

19. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए यह उपयुक्त माना गया है कि रूस के अन्य सहयोगी नियांतकों द्वारा दी गई सूचना के आधार पर जो एस सी सेवर्स्टल के लिए सामान्य मूल्य निर्धारित किया जाए।

20. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस्पात करमत के मामले में स्थिति भिन्न है क्योंकि कंपनी काजाकिस्तान में हॉट रोल्ड वस्तुओं की एकमात्र उत्पादक है।

21. जहां तक अन्य नियांतकों का संबंध है, किसी भी हितबद्ध पार्टी द्वारा कोई तर्क नहीं दिया गया है। इसलिए संबद्ध देशों के अन्य नियांतकों के संबंध में प्रारम्भिक निष्कर्षों की पुष्टि की जाती है।

22. पाटन मार्जिन निम्नानुसार निकलता है :—

देश/नियांतक का नाम	पाटन मार्जिन (पाटन मार्जिन का %)
1	2
रूस के मामले में	
क. जो एस सी सेवर्स्टल	113.37
ख. नोवोलीपस्टक आयरन एण्ड स्टील कार्पोरेशन	78.37
ग. मेनितोगोस्क मेटलजिक प्लांट	56.71

1

2

यूक्लेन के मामले में

अजोब्स्टाल आयरन एण्ड स्टील वर्क्स

08.96

कज्जाकिस्तान के मामले में

इस्पात कारबेट—हॉट रोल्ड कोइल्स

न्यूनतम

हॉट रोल्ड स्ट्रॉप्स

18.46

(क) क्षति तथा कारणात्मक संबंध

23. उपरोक्त नियम 11 अनुबंध-II के अन्तर्गत जब क्षति के निष्कर्ष पर पहुंचा जाए तो ऐसे निष्कर्ष में, “पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं की घरेलू बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामकारी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए” घरेलू उद्योग को हुयी क्षति का निर्धारण शामिल किया जाएगा। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना जरूरी समझा गया है कि भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से कीमत में महत्वपूर्ण कमी आयी है या नहीं अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से काफी हद तक कीमतों में कमी या कीमतों की वृद्धि में रुकावट आयी, है या नहीं जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हुयी होती।

इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक निष्कर्षों में यह नोट किया गया था कि भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच के लिए उपर्युक्त नियमों के अनुबंध-II(IV) के अनुसार प्राधिकारी उन संकेतकों पर विचार कर सकते हैं। जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है जैसे उत्पादन, क्षमता-उपयोग, बिक्री-मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, नियन्त्रण बिक्री, आय, पाटन-मात्रा तथा मार्जिन आदि। मापदण्डों की सूची विस्तृत नहीं है और न ही उसमें सूचीबद्ध किसी भी एक मापदण्ड से क्षति का पता चला है। प्राधिकारी सभी संगत आर्थिक भापदण्डों का मूल्यांकन कर सकते हैं।

जब उपलब्ध आंकड़े उत्पादन-प्रक्रिया, उत्पादकों की बिक्रियों और लाभों के रूप में ऐसे मापदण्डों के आधार पर उस उत्पादन की अलग पहचान की अनुमति देते हों, तो समान वस्तु के घरेलू उत्पादन के संबंध में नियमों के अनुबंध-II के पैरा (VI) के अनुसार पाटित आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यदि उस उत्पादन की अलग पहचान संभव नहीं हो तो पाटित आयातों के प्रभावों का मूल्यांकन उत्पादों के ऐसे सबसे छोटे समूह या रेंज, जिसमें वह समान उत्पाद सम्मिलित होता है, जिसके लिए आवश्यक सूचना प्रदान की जा सकती है, की जांच द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा।

इस मामले में यह देखा गया है कि प्रत्येक उत्पाद के उत्पादन का पृथक वर्गीकरण संभव नहीं है। उदाहरणार्थ हॉट रोल्ड स्ट्रॉप्स की मांग हॉट रोल्ड कॉश्टल्स की आपूर्ति द्वारा प्रभावित होगी। इसके अलावा एक हॉट रोल्ड प्रोडक्ट की उत्पादन क्षमता उत्पादन और बिक्री मात्रा दूसरे हॉट रोल्ड प्रोडक्ट से प्रभावित होगी। अलग-अलग हॉट रोल्ड उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग की क्षति का मूल्यांकन किया जाना अनुपयुक्त होगा। सभी हॉट रोल्ड उत्पादों के लिए समग्र रूप से घरेलू उद्योग को हुयी क्षति वर्तमान परिस्थितियों में अधिक उपयुक्त होगी।

24. हितवद्ध पक्षों द्वारा क्षति और कारणात्मक संबंध पर दिए गए तर्क निम्नानुसार हैं।

(क) प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम में ईस्सर और सेल की औसत बिक्री वसूली की जो तुलना की गई है, वह उपयुक्त नहीं है।

प्राधिकारी की स्थिति

प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम में ईस्सर और सेल की औसत बिक्री वसूली की जो तुलना की गई वह इन कंपनियों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना पर आधारित है। इन कंपनियों में प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद अतिरिक्त सूचना प्रस्तुत की जिसका सत्यापन प्राधिकारी ने आवश्यक अपेक्षित स्तर तक किया। इन दोनों कंपनियों द्वारा प्रस्तुत की गई अतिरिक्त सूचना से स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक जांच परिणाम में प्राधिकारी द्वारा की गई ईस्सर और सेल की बिक्री वसूली की तुलना निम्नलिखित कारणों से ही नहीं थी :

- (I) औसत बिक्री वसूली हॉट रोल्ड उत्पादकों में से प्रत्येक की वसूली का औसत है। क्षेत्रों और प्लेटों की बिक्री वसूली में काफी भिन्नता है। चूंकि इन उत्पादों के मामलों में बिक्री की भिन्न-भिन्न मात्रा अंतर्गत है, इसलिए औसत के आधार पर इनकी तुलना करना अनुचित होगा;
- (II) प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम में विचार किए ईस्सर की औसत बिक्री वसूली में कंपनी द्वारा विविध प्रकार से दी गई बड़ी मात्रा में रियायतें शामिल हैं। कंपनी ने रियायतें के लिए प्रदान की हैं। कंपनी द्वारा दिखाई गई बिक्री वसूली में ये राशियां शामिल की गई हैं जिनकी वजह से प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम में विचार की गई ईस्सर की वसूली काफी अधिक थी;
- (III) ईस्सर ने वस्तुओं की बिक्री गोदाम द्वार पर कीमत के आधार पर की है। कंपनी ने जो ग्राहकों से भाड़ा वसूली की है वह भी बिक्री प्राप्त में शामिल है। इसके मुकाबले में सेल द्वारा दिखाई गई बिक्री वसूली में कोई भाड़ा व्यव शामिल नहीं है।
- (IV) ईस्सर ने माल की बिक्री सेल की तुलना में अपेक्षाकृत दीर्घावधि ऋण पर की है। इसलिए बिक्री कीमत में कंपनी द्वारा वहन की गई ऋण लागत भी शामिल है।

(V) ईस्सर को बिक्री वसूली में विविध वित्तीय खर्च शामिल हैं जैसे कि जो कंपनी ने अपने ग्राहकों की ओर से वहन किए हैं।

(VI) ईस्सर ने अपने माल की बिक्री परिवहन लागत के रूप में सेल के मुकाबले अपने प्रतिस्पर्धी लाभों को देखते हुए की थी। यदि माल की खरीद सेल से की गई होती तो कंपनी के उपभोक्ताओं को माल के परिवहन में जितना खर्च करना पड़ता उसी सीमा तक कंपनी ने अधिक कीमतें वसूली।

(VII) सेल द्वारा दावा की गई बिक्री प्राप्ति, ग्राहकों को की गई सीधी बिक्री, गोदामों से बिक्री, निर्यात बिक्री का एक औसत है और इसमें शुटिपूर्ण और पुराने माल की बिक्री भी शामिल है। सेल माल की बिक्री सीधे करती है और गोदामों से भी करती है। इसकी % बिक्री गोदामों से हुई है। गोदामों से बिक्री करने की स्थिति में सेल को अपने संयंत्र से गोदाम तक की परिवहन लागत वहन करनी पड़ती है। सेल द्वारा दिखाई गई बिक्री प्राप्ति सीधे की गई बिक्री गोदाम और निर्यात के जरिए बिक्री प्राप्ति का एक औसत है।

(ग) वर्ष 1995-96 में ईस्सर का उत्पादन 680664 मी. टन था न कि शून्य जैसा कि प्राधिकारी ने विचार किया है।

प्राधिकारी की स्थिति

कंपनी द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम में वर्ष 1995-96 के लिए ईस्सर का उत्पादन शून्य माना था। कैम्प ने याचिका में वर्ष 1995-96 में किसी उत्पादन का दावा नहीं किया था। कंपनी ने याचिका की घोषणा 1 अप्रैल, 1996 से की है। तथापि कंपनी ने अब वर्ष 1995-96 में प्रायोगिक दौर में 680664 मी. टन उत्पादन करने की सूचना दी है।

प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए जो संगत तथ्य है वह यह है कि कंपनी ने बहुत बड़ी मात्रा में उत्पादन किया है चाहे इसे एक प्रायोगिक उत्पादन के रूप में घोषित किया जाय अथवा याचिका की उत्पादन के रूप में। इसके अतिरिक्त कंपनी द्वारा उत्पादित 680664 मी. टन माल उसकी वार्षिक क्षमता का 34% है और यह घरेलू उद्योग को हुई क्षति के मूल्यांकन के लिए एक महत्वपूर्ण मात्रा है। इसलिए प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान के उत्पादन को क्षति के मूल्यांकन के प्रयोजन के लिए स्वीकार किया है।

(ग) प्राधिकारी को ऐसे उद्योग को घरेलू उद्योग मानना चाहिए क्योंकि यह अस्तित्व में है। घरेलू उद्योग की अंगभूत सभी कंपनियों को क्षति निर्धारण के लिए स्वीकार किया जाना चाहिए। घरेलू उद्योग की किसी घटक कंपनी की जांच अलग से नहीं की जानी चाहिए जैसा कि प्राधिकारी ने किया है।

प्राधिकारी की स्थिति :

हालांकि यह सही है कि जो उद्योग अस्तित्व में है उसे प्राधिकारी को घरेलू उद्योग के रूप में स्वीकार करना चाहिए और घरेलू उद्योग की सभी घटक कंपनियों पर सामूहिक रूप से क्षति निर्धारण के लिए विचार किया जाना चाहिए, फिर भी याचिकाकर्ता का यह तर्क कि घरेलू उद्योग की गैर-घटक कंपनियों की जांच अलग से होनी चाहिए, सही नहीं है। घरेलू उद्योग की अलग-अलग घटक कंपनियों का निष्पादन पाइट आयातों और घरेलू उद्योग की क्षति के बीच कारणात्मक संबंध स्थापित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। घरेलू उद्योग को कुछ घटक कंपनियों द्वारा पाठन से भिन्न कारणों से अच्छा निष्पादन न होने की स्थिति में इसके लिए पाठन का दोषी नहीं माना जा सकता है।

(घ) घरेलू स्त्रोतों से बड़ी उपलब्धता घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं था। पिछले वर्ष की तुलना में 1995-96 में उत्पादन में वृद्धि के बावजूद इस वर्ष घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में वृद्धि हुई है। तथापि, पिछले वर्ष की तुलना में उत्पादन में काफी कम वृद्धि होने के बावजूद पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लाभप्रदता में काफी गिरावट आई है।

प्राधिकारी की स्थिति

‘घरेलू उद्योग के उत्पादन की स्थिति, उसकी लाभप्रदता और संबंध देशों से आयात कीमतें निम्नानुसार हैं—

पिछले वर्ष की तुलना	पिछले वर्ष की तुलना
में 1995-96 में परिवर्तन	में 1996-97 में परिवर्तन
उत्पादन (मी. टन)	(+) 849925
लाभ (करोड़ रु.)	(+) ***
	(+) 411901
	(-) ***

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि भारतीय आजार में संबंधित माल के उत्पादन (और अब उपलब्धता) में वृद्धि में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता को प्रभावित नहीं किया क्योंकि उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि के बावजूद पिछले वर्ष की तुलना में 1995-96 में लाभ में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई थी। तथापि, उत्पादन में पिछले वर्ष में हुई वृद्धि की तुलना में जांच अवधि में उत्पादन वृद्धि अपेक्षाकृत कम होने के बावजूद पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लाभ में महत्वपूर्ण गिरावट आई। जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता में महत्वपूर्ण कमी का कारण यह था कि पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में महत्वपूर्ण गिरावट आई क्योंकि आयात कीमतों में महत्वपूर्ण गिरावट आई थी जैसाकि इस अधिसूचना में अन्यत्र वर्णित है।

(ज) सेल के भंडार में वृद्धि से इसकी लाभप्रदता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। सेल के कपास भंडार सहित बिक्री की स्थिति और उसकी लाभप्रदता निम्नानुसार है।

घोषित स्थिति से परिवर्तन

प्राधिकारी की स्थिति

सेल के स्टॉक की स्थिति और उसकी लाभप्रदता निम्नानुसार है :—

	पिछले वर्ष की तुलना	पिछले वर्ष की तुलना
	में 1995-96 में परिवर्तन	में 1996-97 में परिवर्तन
भंडार (मी. टन)	+++	+++
लाभ (करोड़ रु. में)	+++	+++
उत्पादन लागत (रु. प्रति मी. टन में)	+++	+++
औसत बिक्री प्राप्ति (रु. प्रति मी. टन में)	+++	+++

उपर्युक्त को देखते हुए, प्राधिकारी घेरलू उद्योग की इस दलील को स्वीकार करते हैं कि सेल के स्टॉक में वृद्धि से उसकी लाभप्रदता पर प्रभाव नहीं पड़ा है। स्टॉक में वृद्धि होने से स्टॉक के रखरखाव लागत में वृद्धि होती है और इसलिए उत्पादन लागत में भी वृद्धि हो जाती है। पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि में सेल की लाभप्रदता में गिरावट मुख्यतः इसलिए आई व्यांकिक इसकी उत्पादन लागत में वृद्धि के बावजूद इसकी बिक्री कीमत गिर गई (आयात कीमतों में गिरावट के साथ-साथ)।

(च) संबद्ध देशों से सी आई एफ निर्यात कीमत सभी दूसरे देशों से निर्यात कीमत की तुलना में काफी कम है।

प्राधिकारी की स्थिति

घेरलू उद्योग के संबद्ध देशों और गैर-संबद्ध देशों से सी आई एफ निर्यात कीमत निम्नानुसार रही :—

	1995-96	1996-97
संबद्ध देश	10703	10424
गैर-संबद्ध देश	14652	13267

प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से इतर देशों के लिए सी आई एफ निर्यात कीमत संबद्ध देशों की तुलना में काफी अधिक थी। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता कि दूसरे देशों से हुए आयातों से घेरलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

(छ) इस मामले में पैरामीटरों की तुलना अन्य मामलों जैसे पीटीए, धातुकर्मीय कोक इत्यादि जिनमें निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है, के साथ करने से यह स्पष्ट होगा कि घेरलू उद्योग को इस मामले में भी वास्तविक क्षति हुई है।

प्राधिकारी का विचार :

इस मामले को अन्य मामलों जैसे कि पीटीए, धातुकर्मीय कोक अत्यादि के साथ तुलना करना ठीक नहीं होगा, विशेषकर तब जबकि याचिकाकर्ताओं द्वारा तुलना को केवल कुछ ही क्षति मापदण्डों तक सीमित किया गया है। प्राधिकारी ने क्षति का जो मूल्यांकन किया है वह संयुक्त तथा संचयी रूप से सभी पैरामीटरों पर आधारित हैं तथा किसी विशेष पैरामीटर पर आधारित नहीं है।

(ज) घेरलू उद्योग को विभिन्न विक्री संबंधन योजनाओं जैसे भारी छूट, क्रेताओं के खर्च की क्षतिपूरी, वरीयता उपभोक्ता छूट इत्यादि का सहारा लेने के लिए मजबूर किया गया है। वास्तव में, घेरलू उद्योग को क्रेताओं को आयातों से दूर रखने के लिए बिक्री संबंधन योजनाओं के नए तरीके खोजने के लिए मजबूर किया गया है।

प्राधिकारी का विचार :

क्षति को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों में घेरलू उद्योग को क्षति दर्शने वाले कुछ आर्थिक मानदण्डों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि उसमें दर्शित मानदण्डों की सूची सम्पूर्ण नहीं है और न ही उसमें सूचीबद्ध कोई भी मानदण्ड वैयक्तिक रूप से क्षति प्रदर्शित कर सकता है। भारी छूट, क्रेताओं के खर्चों की क्षतिपूरी, वरीयता उपभोक्ता छूट इत्यादि जैसे विभिन्न विक्री संबंधन योजनाएं भी क्षति प्रदर्शित कर सकते हैं। तथापि घेरलू उद्योग ने इन कारकों के आधार पर न तो क्षति का दावा किया है और न ही प्रारम्भिक जांच से पूर्व अपेक्षित सूचना उपलब्ध करवाई है। वास्तव में, प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता से घेरलू उद्योग द्वारा इसके उत्पादों की बिक्री से अर्जित निबल औसत बिक्री वसूली के संबंध में सूचना प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था। निवल बिक्री वसूली में कर तथा शुल्क छूट, कमीशन, आपूर्तिकर्ताओं द्वारा क्रेताओं को प्रदत्त विभिन्न प्रोत्साहन जैसे सभी खर्च शामिल हैं। चूंकि घेरलू उद्योग द्वारा प्रारम्भिक जांच से पूर्व अपेक्षित सूचना प्रदान नहीं की गयी थी इसलिए प्राधिकारी को यह विश्लेषण करने से रोका गया कि क्या घेरलू उद्योग को इन आयातों पर क्षति हुई थी।

(झ) स्टील इतना कीमत संवेदनशील है कि कीमतों में थोड़ा सा अंतर भी उपभोक्ता के घाटे का कारण हो सकता है। इसलिए, घेरलू उद्योग को आयातित कीमत के साथ कीमत समानता सुनिश्चित करनी होती है। पारित कीमत पर आयात होने से कीमतों की बैंच मार्किंग हो जाती है तथा यदि नियातकों द्वारा एक बार कीमतों कम कर दी जाती है तो घेरलू उद्योग के लिए बेहतर कीमतों अर्जित करना कठिन हो जाता है। उक्त

देशों से पाटन उन उपभोक्ताओं के लिए भी सामान कीमत स्तर पर मांग का कारण बना जो कि पारम्परिक रूप से घरेलू मात्रों से खरीद रहे थे तथा जिन्होंने किसी वस्तु का न ले आया किया है और न आया करने की कोई इच्छा रखते थे। ऐसे क्रेताओं ने वही कीमतें प्रदान करने का आग्रह किया है जो अन्य को उपलब्ध हैं जिन्होंने आयातों का सहारा लिया है ताकि उनकी प्रतिस्पर्धा बनी रहे। इस प्रकार इस उद्योग को न केवल उन उपभोक्ताओं से क्षति हुई है जिन्होंने इससे वस्तुएं खरीदी हैं बल्कि उनसे भी जिनको पाटित कीमतों पर आयातों को देखते हुए कम कीमतों की पेशकश करनी पड़ी थी।

प्राधिकारी का विचार :

प्राधिकारी घरेलू उद्योग के दावे का समर्थन करते हैं। इस जैसे उद्योग में कम कीमत पर की गई एकल खरीद भी अन्यों को कीमतें घटाने पर मजबूत कर सकता है ताकि नियातक द्वारा प्रदत्त कम कीमतों की बराबरी की जा सके अथवा बिक्री का नुकसान उठाए। अतः किसी एक आपूर्तिकर्ता द्वारा किसी एक उपभोक्ता को प्रदत्त ऐसी कम कीमतों से अन्य आपूर्तिकर्ताओं तथा उपभोक्ताओं के लिए एक बैंचमार्क कीमत स्थापित हो सकती है तथा अन्य आपूर्तिकर्ताओं के पास या तो बाजार छोड़ने अथवा अपनी कीमतें प्रभावी रूप से घटाने का ही विकल्प रह जाता है। चूंकि, उत्पादन में कटौती घटी हुई कीमतों पर बिक्री करने की तुलना में आर्थिक रूप से अधिक हानिकारक हो सकता है इसलिए यह आशा की जा सकती है कि अन्य आपूर्तिकर्ता भी अपनी कीमतें कम करेंगे अथवा उपभोक्ताओं को बनाए रखने के लिए अन्य प्रोत्साहन देंगे।

(झ) संबद्ध देशों से नियात कीमतों में महत्वपूर्ण गिरावट आई है। उक्त देशों से आयातों के कारण भारतीय बाजारों में कीमतों में कमी आई है। इस बात के स्पष्ट साक्ष्य हैं कि आयातों ने सर्से आयातों को देखते हुए घरेलू उद्योग को बिक्री कीमतें घटाने पर बाध्य किया है।

प्राधिकारी का विचार :

संबद्ध देशों से हुए नियात कीमतें निम्नलिखित ग्राफ में यथा प्रदर्शित थीं :



टिप्पणी : उपरोक्त वर्ष 1994-95, 1995-96 में नियात कीमत तथा 1996-97 की जांच अवधि में प्रत्येक माह में नियात कीमत प्रदर्शित करता है।

प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि पिछले वर्षों की तुलना में संबद्ध देशों से नियात कीमत में कोई महत्वपूर्ण गिरावट नहीं हुई है। तथापि, जांच अवधि में नियात कीमत में महत्वपूर्ण गिरावट आई है। इसलिए, नियात कीमत में जांच अवधि में भी नियात कीमत में महत्वपूर्ण गिरावट रही। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के उद्देश्य के लिए जो संगत है वह आयातों की पहुंच कीमत है और न कि सी आई एफ नियात कीमत। इसलिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत के साथ आयातों की पहुंच कीमत की तुलना की है तथा इस स्थिति पर निम्नलिखित पैरा में चर्चा की गई है।

(ट) संबद्ध देशों से होने वाले आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से काफी कम थी। आयातों ने घरेलू उद्योग को इसकी उचित बिक्री कीमत से कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर किया।

प्राधिकारी का विचार :

संबद्ध देशों से होने वाले आयातों की पहुंच कीमत तथा निवल बिक्री वसूली नीचे दिए गए ग्राफ में यथा प्रदर्शित थी :—



टिप्पणी : उपरोक्त वर्ष 1995-96 में नियात कीमत तथा वर्ष 1996-97 की जांच अवधि में प्रत्येक माह में नियात कीमत प्रदर्शित करता है।

प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि वर्ष 1994-95 तथा 1995-96 में पहुंच कीमत घरेलू उद्योग के बिक्री कीमत से अधिक थी। लेकिन

यह जांच अवधि में काफी गिर गई थी। इसके अतिरिक्त, जांच की अवधि में पहुंच कीमतें इस स्तर तक गिर गयीं कि यह — से घेरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से नीचे थी। इस प्रकार जांच अवधि में आयातों ने भारतीय आजार में कीमतें कम कर दी थीं जिससे घेरेलू उद्योग को इसकी कीमतें कम करने के लिए आध्य होना पड़ा। इसके अतिरिक्त, घेरेलू उद्योग की बिक्री कीमतें भारत में संबद्ध वस्तुओं की उचित बिक्री कीमत से काफी कम थी।

(उ) हॉट रोल्ड उत्पादों के उत्पादन के लिए शामिल विनिर्माण प्रक्रिया को देखते हुए घेरेलू उद्योग के पास अपने उत्पादन को इष्टतम करने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है ताकि उत्पादन की प्रति इकाई के लिए निर्धारित खर्च के भार को न्यूनतम किया जा सके जो इस प्रकार के उद्योग में काफी अधिक है। एक बार उत्पादन हो जाने पर उद्योग के पास इसे बेचने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है चाहे उसे कम कीमत पर ही क्यों न बेचना पड़े ताकि इसके अधिक स्टॉक हो जाने या इनके रख-रखाव लागत से बचा जा सके। अतः उद्योग को बिक्री करने के लिए जो भी वह प्रयास कर सकता है वे सारे प्रयास करने पड़ते हैं तथा आयातों को रोकना पड़ता है। यदि भारतीय उद्योग द्वारा विभिन्न कीमत योजनाओं तथा कीमत घटाती उपायों का सहारा न लिया गया होता तो आयात बहुत अधिक बढ़ गया होता। इस प्रकार के मामले में कीमत प्रभाव तथा न कि मात्रा प्रभाव वास्तविक क्षति के सत्य संकेतक हैं।

एस्सार ने यह अनुरोध किया है कि हालांकि वह अपने उत्पाद को बेच सकता था लेकिन उसे उपभोक्ताओं को अस्थिरक ऊचे ऋण प्रदान करने पड़े। कम्पनी की औसत ऋण अवधि दिन (1995-96) से बढ़कर दिन (1996-97) हो गयी। अस्थिरक ऋण बिक्री से कम्पनी की अर्थव्यवस्था तथा धन उगाहने की इसकी योग्यता पर भारी प्रभाव पड़ा, तथा अंततः इसकी उत्पादन लागत में वृद्धि हो गयी। अतः उत्पादन एवं बिक्री में हुई बढ़ोत्तरी पर कम्पनी पर इनके प्रभावों के आलोक में विचार किया जाना चाहिए।

प्राधिकारी का विचार :

जैसा कि और कहीं विचार किया गया है, एक बार किसी अन्य आपूर्तिकर्ता के द्वारा कम कीमतें प्रदान कर देने पर घेरेलू उद्योग के पास या तो उपभोक्ता को खो देने अथवा अपनी वसूली में कमी करने का विकल्प बनता है। यह महसूस किया जाता है कि आजार को खो देने से उत्पादन में कटौती करना शामिल होता है जिससे कि उत्पादन प्रति इकाई खर्च के भार में बढ़ोत्तरी हो जाएगी। इससे घेरेलू उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता और अधिक खराब हो जाएगी। घेरेलू उद्योग के पास बेहतर विकल्प कीमतों में कमी करना तथा उपभोक्ता को बनाए रखना है। अतः प्राधिकारी याचिकाकर्ता की इस बात पर सहमत है कि पाटिट आयातों से हुए कम कीमतों को देखते हुए घेरेलू उद्योग ने कम बिक्री कीमतों की लागत पर अपने उत्पादन तथा बिक्री में वृद्धि की।

एस्सार द्वारा लम्बे ऋण प्रदान किए जाने के संबंध में, जैसा कि इन जांचों में अन्यत्र उल्लेख किया गया है, ऋण पर बिक्री भी क्षति का एक सूखक है। तथापि यह सिद्ध करने का तात्पर्य कि घेरेलू उद्योग को इस आधार पर क्षति हुई है, घेरेलू उद्योग का है। निवल औसत बिक्री कीमतों पर सूचना उपलब्ध कराते समय घेरेलू उद्योग ने यह संकेत नहीं दिया कि उपभोक्ताओं को बनाए रखने के लिए उसे अस्थिरक ऊचे ऋण प्रदान करने के लिए मजबूर होना पड़ा था। यह सूचना प्रारम्भिक जांच के बाद उपलब्ध करायी गयी थी जिसकी आवश्यक सीमा तक प्राधिकारी द्वारा जांच की गयी। एस्सार द्वारा दी गयी सूचना यह दर्शात है कि इसके कुछ प्रमुख उपभोक्ताओं के लिए इन उत्पादों तथा औसत बकाया भुगतानों के लिए इसके औसत देनदार निम्नानुसार थे :—

(उ) संबद्ध देशों से किया गया कुल आयात देश की कुल मांग का केवल 2.8% ही बनता है। ई.सी. मूल विनियमन के अनुच्छेद 5(7) के साथ पठित अनुच्छेद 9 (3) में यह व्यवस्था है कि वहां पर क्षति को सामान्य तौर पर नगण्य समझा जाएगा, जहां पर संर्वधित आयात 1% से कम आजार हिस्से को दर्शाते हैं, यदि ऐसे देशों का संचयी रूप से सामुदायिक खपत का 3% या उससे अधिक का हिस्सा नहीं बनता हो।

प्राधिकारी का विचार :

भारतीय नियमों के अंतर्गत किसी देश से किए गए आयात की मात्रा वहां पर न्यूनतम से अधिक बैठती है, जहां पर सामान उत्पाद के आयातों में उसकी मात्रा 3% से अधिक बैठती हो, यदि ऐसे देशों का अलग-अलग हिस्सा आयातों के 3% से अधिक नहीं बनता हो और सामूहिक रूप से उनका हिस्सा 7% से अधिक न बनता हो। इस मामले में, आयात न्यूनतम सीमा से अधिक हैं और इसलिए यह नहीं माना जा सकता कि क्षति नगण्य हुई है।

(उ) पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से किए जाने वाले आयातों में निरपेक्ष रूप से गिरावट आई है। उत्पादन और भारत में उक्त माल की खपत की तुलना में संबद्ध देशों से होने वाले आयातों में गिरावट आयी है। इसलिए, पाटिट आयातों से घेरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

प्राधिकारी का विचार :

यह कहना वास्तविक तौर पर गलत है कि संबद्ध देशों के किए गए आयातों में निरपेक्ष रूप से वृद्धि नहीं हुई है। जैसाकि प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों में पाया है कि संबद्ध देशों से किए गए आयात 1994-95, 1995-96, और 1996-97 में 77827, 234147 और 191854 मी. टन के थे। डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रकाशित सूचना के अनुसार वर्ष 1992-93 और 1993-94 में वास्तव में कोई आयात नहीं हुआ था। घेरेलू उद्योग को हुई क्षति का विश्लेषण करते समय प्राधिकारी को पिछले कई वर्षों में किए गए आयातों की प्रवृत्ति का

मूल्यांकन करना होता है न कि केवल पिछले वर्ष का। इसलिए, प्राधिकारी ने माना है कि आयातों में निरपेक्ष रूप से वृद्धि हुई है।

(त) याचिका के ही अनुसार आयातों का पहुँच मूल्य रूस और कजाकिस्तान से हुयी औसत बिक्री प्राप्ति से अधिक है। इसलिए, पाटित आयातों से कीमत में कटौती किए जाने का कोई साक्ष्य नहीं है।

प्राधिकारी का विचार :

यह तर्क वास्तविक तौर पर गलत है। जैसाकि पहले ही अन्यत्र पाया गया है, कि जांच अवधि में आयातों का पहुँच मूल्य बिक्री कीमत से कम था। इसलिए, संबद्ध देशों से किए गए आयातों के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत में कटौती की गयी थी।

(थ) संबद्ध देशों से किए गए आयातों के परिणामस्वरूप कीमतों में कोई गिरावट नहीं आयी है। कीमतों में वृद्धि करने में घरेलू उद्योग की असमर्थता का कारण सेल (एसएआईएल) की कम बिक्री कीमतों का होना है जिसका बाजार हिस्से का तकरीबन 45% भाग बैठता है। चूंकि प्राथमिक बाजार में आयात कीमत से कम कीमत पर बिक्री की जा रही थी इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि आयातों के कारण बाजार में कोई गिरावट आयी है। इसके अतिरिक्त, उत्पादन लागत में वृद्धि मूल रूप से एस्वार के कारण हुयी है जिसकी उत्पादन लागत ज्यादा है। सेल कतिपय लागत संबंधी लाभों को ध्यान में रखते हुए प्रतिस्पर्धी रूप से अपने उत्पाद की कीमत निर्धारण करने में सक्षम था।

प्राधिकारी का विचार :

यह कहना गलत होगा कि सेल अन्य की तुलना में कम कीमत पर बिक्री कर रहा था। जैसी कि अन्यत्र चर्चा की गई है, एस्सार सहित सेल और अन्यों की बिक्री की शर्तें अलग-अलग थीं। चूंकि एस्सार और सेल की औसत बिक्री प्राप्ति अनेक कारकों से प्रभावित हुई है, इसलिए प्राधिकारी ने दोनों कंपनियों के बिक्री प्राप्तियों का विश्लेषण किया है और यह पाया है कि दोनों कंपनियों की बिक्री प्राप्तियां तुलनीय हैं। प्राधिकारी इस संबंध में आगे और और देने से बचना चाहता है क्योंकि इसमें गोपनीय स्वरूप की सूचना अन्तर्गत है।

यह कहना भी उचित नहीं होगा कि बाजार में प्रमुख बिक्री अपने प्रतिस्पर्धियों से कम कीमतों पर बिक्री कर रहे होंगे खासकर तब जब बाजार में संबंधी कीमत चल रही है। यद्यपि यह स्थिरकार किया जाता है कि अन्यों के मुकाबले सेल की उत्पादन लागत कम है, तथापि इसका तात्पर्य यह नहीं निकलता है कि अपनी कीमत कम होने के कारण बात्र से उसे कम कीमतों पर बिक्री करनी चाहिए।

यह भी वास्तविक तौर पर सही नहीं है कि एस्सार के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है। पिछले वर्षों की तुलना में जांच अवधि में सेल के उत्पादन लागत में भी वृद्धि हुई है। तथापि, सेल को अपनी कीमतों को बढ़ाने के लिए आध्य किया गया था क्योंकि उसे आयातों के कारण कीमतों में कटौती पड़ रही थी, जैसाकि नीचे दी गयी तालिका में दर्शाया गया है :—

क्रम सं. मापदण्ड	1994-95	1995-96	1996-97
1. उत्पादन लागत	***	***	***
2. औसत बिक्री कीमत	***	***	***

उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि सेल केंद्र उत्पादन लागत में वर्षों से और जांच अवधि में वृद्धि हुई है। बिक्री मूल्य में भी वर्षों से वृद्धि हुई है। लेकिन, जांच अवधि में इसमें गिरावट आई है और वास्तव में यह गिरावट जांच अवधि के कुछ महीनों में उत्पादन लागत से भी नीचे चली गई थी। इसलिए, संबद्ध देशों से किए गए आयातों के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमतों में गिरावट आयी।

(द) सेल की स्टाक यार्ड कीमतों की तुलना पहुँच कीमतों के साथ नहीं की जा सकती क्योंकि स्टाक कीमतों में फैक्ट्री से स्टाकयार्ड तक का अंतर्वेशीय भाग और स्टोरेज एवं बैंडलिंग प्रभार शामिल होते हैं जबकि पहुँच कीमतों में से प्रभार शामिल नहीं होते हैं। पहुँच कीमतों के साथ तुलना करने के लिए सेल की केवल कारखाना लागत कीमतों पर ही विचार किया जाना चाहिए।

प्राधिकारी का विचार :

प्राधिकारी सामान्यतः आयातों की पहुँच कीमत पतन स्तर पर मानते हैं और घरेलू उद्योग की बिक्री-कीमत कारखानागत स्तर पर मानते हैं। लेकिन इस बात से मनाही नहीं की जा सकती कि क्रेता अपने आदेश अपनी गोदाम पर सामान की पहुँच लागत को देखते हुए देते होंगे। इसलिए उचित तरीका यह है कि इस बात की जांच करने के लिए कि क्या कीमतों में कोई कटौती की गयी थी अथवा कीमत में गिरावट की गयी थी अथवा कीमत में कभी की गयी थी अथवा नहीं। प्राधिकारी को ग्राहकों के गोदाम पर आयातों की कीमतों पर विचार करना चाहिए। चूंकि ग्राहकों के गोदाम पर पहुँच कीमतों की जांच करना कठिन है, इसलिए प्राधिकारी आमतौर पर पतन द्वारा पर और कारखाना स्तर पर तुलना करते हैं। तथापि, इस जैसी स्थिति में, सेल एक प्रमुख बाजार हिस्सेदार के रूप में देश के विभिन्न जगहों पर स्थित विभिन्न स्टाक यार्डों में सामान भेजता है। सेल इन गोदामों तक की तुलायी लागत बहन करता है। ये स्टाकयार्ड गोदामों की तरह ही होते हैं जिनका रख-रखाव उत्पादकों द्वारा संयंत्रों पर किया जाता है। इन गोदामों से ग्राहकों के गोदामों तक की तुलायी-लागत ग्राहकों द्वारा बहन की जाती है। इसलिए, ग्राहकों के पास यह उत्तम विकल्प होता है कि वह खरीद या तो पास के सेल के गोदाम से करें या निकटतम पतन पर हुए आयात से करें। इसलिए स्टाकयार्ड स्तर पर सेल की बिक्री कीमतों की तुलना पतन स्तर पर आयातों की पहुँच कीमत के साथ करना अनुचित नहीं हो सकता यद्यपि इस बात की मनाही नहीं की जा सकती कि ग्राहक द्वारा खर्च को जाने वाली

वास्तविक तुलनायी लगात में अन्तर आ सकता है चाहे इसकी तुलना कारखाना द्वारा आधार पर की गई हो या स्टाक्यार्ड द्वारा के आधार पर। तथापि, प्राधिकारी ने अन्यत्र इन निष्कर्षों में नोट किया है, विस्तृत रूप से एस्सार और सेल की औसत निवल प्राप्तियों की तुलना की है। यह पाया है कि ये दोनों का एक ही क्षेत्र है। इसलिए, प्राधिकारी ने एस्सार की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना आयातों की पहुंच कीमत के साथ की है।

(ध) उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, भारतीय उद्योग द्वारा धारित बाजार हिस्सा से यह संकेत नहीं मिलता है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति हुई है।

प्राधिकारी का विचार

घरेलू उद्योग से संबंधित सभी आर्थिक मापदण्डों से क्षति का संकेत मिलना आवश्यक नहीं है और न ही इन आर्थिक मापदण्डों में से किसी एक से अथवा अनेक से अनिवार्यतः घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के संबंध में निर्णायक घोर्णदर्शन प्राप्त होता है। घरेलू उद्योग पर पाइटा आयातों के प्रभावों की जांच में सभी संगत आर्थिक कारकों का मूल्यांकन शामिल होता है। सभी संगत आर्थिक कारकों के संबंधी मूल्यांकन से मात्र यह संकेत मिलता है कि क्या घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है अथवा नहीं।

(न) सेल ने हमेशा उच्च स्तर का बीजक रखा है। सेल द्वारा बीजक में कोई गयी वृद्धि भी बाजार में एस्सार के प्रवृत्ति के कारण हुई है।

प्राधिकारी का विचार

जैसाकि प्रारंभिक निष्कर्षों में प्राधिकारी ने माना है, सेल के बीजक में वृद्धि पाइटा आयातों के कारणों से हुई प्रतीत नहीं होती है। तथापि जैसा कि पिछले पैरा में नोट किया गया है, घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले सभी आर्थिक मापदण्डों से क्षति का प्रदर्शित होना आवश्यक नहीं है।

(प) याचिकाकर्ता ने विश्वास किया है कि छी. क्यू. प्लेटों की पहुंच कीमत कथित सी आई एफ नियांत मूल्य से काफी अधिक होने के कारण छी. क्यू. प्लेटों के आयातों से कोई पाटन नहीं हो सकता अथवा घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं पहुंच सकती है।

प्राधिकारी का भनतव्य

पाटन संदर्भाधीन वस्तुओं की नियांत कीमत और मिलती-जुलती वस्तुओं के सामान्य मूल्य के बीच का अन्तर है। पाटन हुआ है या नहीं, इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए बी. क्यू. एसेट्स की पहुंच कीमत की तुलना याचिकाकर्ता द्वारा दावा की गई औसत सी.आई.एफ. कीमत के साथ करना उपयुक्त नहीं होगा, एकमात्र प्रासंगिक तथ्य सामान रूप मूल्य और संदर्भाधीन वस्तुओं की नियांत कीमत है। क्षति के लिए बी. क्यू. प्लेटों की पहुंच कीमत तथ्य घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु की उचित बिक्री कीमत का प्रासंगिक मापदण्ड है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए बी. क्यू. प्लेटों की पहुंच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग के लिए बी. क्यू. प्लेटों की उचित बिक्री कीमत के साथ की है और यह पाया है कि पहुंच कीमत उचित बिक्री कीमत से काफी कम है।

(फ) भारत सरकार ने सभी आयातों पर 4% का विशेष अतिरिक्त शुल्क लगाया है जिससे घरेलू उद्योग को होने वाली किसी क्षति में कमी हुई है। इसके अलावा अप्रैल, 1997 से अब तक भारतीय रूपए में करीब 20% की गिरावट आई है, जिससे घरेलू उद्योग को होने वाली किसी क्षति में भी कमी आई है।

प्राधिकारी का भनतव्य

प्राधिकारी जाँच की अवधि के बाद के कारणों पर विचार नहीं करते हैं। किन्तु, प्राधिकारी ने आयातों की पहुंच कीमत पर विचार करते हुए शुल्क का निर्धारण किया है। इन जांच-परिणामों में संगत पैरा में आयातों की पहुंच कीमत के निर्धारण को भी परिभाषित किया गया है।

(ब) चूँकि टिस्को को घरेलू उद्योग की परिधि में नहीं रखा गया है, इसलिए संबंधित कम्पनी द्वारा किए गए आयात को संदर्भाधीन देशों के कुल आयातों में से घटाया जाना चाहिए।

प्राधिकारी का भनतव्य

यह तर्क कानून द्वारा समर्थित नहीं है, इसलिए इसे अस्वीकार किया जा सकता है।

(भ) अगर शुल्क छूट हकदारी योजनाओं के तहत किए गए आयातों को हटा दिया जाए तो संदर्भाधीन देशों से आयात कम होंगे।

प्राधिकारी का भनतव्य

यह तर्क कानून द्वारा समर्थित नहीं है और इसलिए इसे अस्वीकार किया जा सकता है। इसके अलावा ऐसे आयातों से क्षति हो सकती है, क्योंकि उनसे ऐसी बेंचमार्क कीमतें निर्धारित हो सकती हैं जिसकी पेशकश घरेलू उद्योग को उन खरीदारों को भी करनी पड़ सकती है जो कि परंपरागत रूप से घरेलू ग्राहकों से खरीदारी करते रहे हैं और जिन्हें अपनी प्रतिस्पर्द्धात्मकता बनाए रखने के लिए आयात करने की इच्छा नहीं है। यद्यपि ऐसी कंपनियाँ भी भारत सरकार के संबंधित विनियमों के अन्तर्गत आयात करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसके साथ-साथ जैसाकि इन जाँच परिणामों में अन्यत्र नोट किया गया है, संदर्भाधीन देशों से आयातों में कीमत प्रभाव न कि मात्रा प्रभाव घरेलू उद्योग को हो रही क्षति का मूल रूप है।

(म) प्राधिकारी ने प्रारंभिक जाँच-परिणाम में क्षति की मात्रा नहीं बताई है और केवल यह पाया है कि घरेलू उद्योग को कुछ क्षति हुई है।

प्राधिकारी का मतव्य :

प्राधिकारी को घरेलू उद्योग को क्षति के बारे में अपना जाँच परिणाम सकारात्मक रूप से या अन्य प्रकार से देना होता है। कानून के अनुसार उसे क्षति की मात्रा बताने की जरूरत नहीं है। प्राधिकारी ने यह पाया है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

27. उपर्युक्त को देखते हुए, प्राधिकारी ने यह पाया है कि घरेलू उद्योग को पाठित आयातों से वास्तविक क्षति हुई है और इसका प्रमाण निम्नांकित से मिलता है।

- (क) संदर्भाधीन देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमतों को उस स्तर से भी काफी नीचे रखना पड़ा जिससे कि इसके द्वारा किए गए निवेश पर घरेलू उद्योग को उचित लाभ मिला होता।
- (ख) संदर्भाधीन देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग का विशेषकर जाँच अवधि के अन्त में कीमत कम करनी पड़ी। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि बिक्री कीमतें औसत उत्पादन लागत से भी कम थीं जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वित्तीय क्षति हुई।
- (ग) कम की गई कीमतों पर संदर्भाधीन देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को अपने ग्राहकों को बनाए रखने के लिए नई वित्तीय क्षतिपूर्ति की शुरुआत करने के लिए मजबूर होना पड़ा। घरेलू उद्योग को ऐसी योजनाओं की योशकश उन ग्राहकों को भी करनी पड़ी जो कि वैसे किसी समग्री का आयात नहीं करते थे।
- (घ) जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमतें बढ़ाने से रोका गया, जो कि उत्पादन लागत में वृद्धि को देखते थैं था।

उपर्युक्त को देखते हुए, प्राधिकारी का यह विचार है कि पाठित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

अनिम जाँच परिणाम :-

28. उपर्युक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:-

- (क) केवल कजाकिस्तान के उद्गम वाले हॉट रोल ब्यायलस को छोड़कर रूस, कजाकिस्तान और उक्रेन के उद्गम वाले या वहां से निर्यातित हॉट रोल ब्यायलस, प्लेट्स, शीट्स और स्ट्रैप्स का निर्यात उनके सामान्य भूल्य से कम मूल्य पर किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ;
- (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
- (ग) संदर्भाधीन देशों के उद्गम वाली या वहां से निर्यातित संदर्भाधीन वस्तुओं के निर्यात से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

29. प्राधिकारी प्रारम्भिक जाँच परिणाम को पुष्टि करते हैं और विचाराधीन उत्पाद के कस्टम सब डैण्डिंग के 7208 के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटन-रोधी शुल्क लगाने का सुझाव देते हैं जैसा कि संदर्भाधीन देशों के उद्गम वाले या वहां से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद से संबंधित पैरा में बताया है। पाटन रोधी शुल्क कॉलम 3 में लिखित मात्रा और आयातों का पहुंच शुल्क के बीच का अंतर होगा।

क्र.सं.	मद विवरण	मात्रा रु. प्रति मै. टन
1	2	3
1	हॉट रोल्ड ब्यायलस	14300
2	हॉट रोल्ड शीट/प्लेट/स्ट्रैप	15000
3	बॉयलर ब्यालिटी प्लेट	22000

27. प्राधिकारी ने काफी अधिक डंपिंग मार्जिन, निर्यातकों द्वारा सीआईएफ कीमत मात्रा की कोई सूचना न होने के कारण तथा इस केस की वस्तुस्थिति को देखते हुए एक ही मात्रा की दृश्यों सभी निर्यातकों के लिए सुझाव दिया है।

28. इस प्रयोजन के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के अधीन सीमा शुल्क द्वारा निर्धारित और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3अ, 8ब, 9 और 9अ के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी शुल्क का निर्धारणीय मूल्य होगा।

30. उपर्युक्त के अधीन प्राधिकारी 17-06-1998 के प्रारम्भिक जाँच परिणाम की पुष्टि करते हैं।

31. उक्त अधिनियम के अनुसार इस अदेश के खिलाफ सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क, एवं स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के पास अपील की जा सकती है।

रति विनय झा, निर्दिष्ट प्राधिकारी एवम् अपर सचिव

MINISTRY OF COMMERCE
(Directorate General of Anti-Dumping and Allied Duties)

NOTIFICATION

New Delhi, the 18th November, 1998

FINAL FINDINGS

Subject: Anti dumping investigation concerning imports of Hot Rolled Coils/Sheets/ Plates/Strips from Russia, Kazakhstan and Ukraine - Final Findings

14/1/97/ADD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

1. The Procedure described below has been followed:
 - i) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified preliminary findings vide notification dated the 17th June, 1998 and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;
 - ii) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to all the known interested parties who were requested to furnish their views, if any, on the preliminary findings within forty days of the date of the letter;
 - iii) The Authority also forwarded a copy of the preliminary findings to the Embassy of Russia, Kazakhstan and Ukraine in New Delhi with a request that the exporters and other interested parties may be advised to furnish their views on the preliminary findings;
 - iv) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 4th August, 1998. All parties presenting views orally were requested to file written submissions of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any. A number of interested parties attended the hearing;
 - vii) The investigations have been concluded within the time limit extended by the Central Government. The one year time limit expired on 5th Oct.,

1998. The same has been, however, extended by the Central Government by three months and the extended time limit to complete these investigations expires on 5th Jan., 1999;

- viii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- ix) Arguments raised by the interested parties before announcing the preliminary findings, which have been brought out in the preliminary findings have not been repeated herein for sake of brevity. However, the arguments raised by the interested parties have been appropriately dealt in the preliminary findings and/or these findings;
- x) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to all known interested parties and comments received on the same have also been duly considered in these findings.

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY

- 2. The views expressed by the petitioners, importers, exporters and other interested parties on the product under consideration, standing of the petitioners to file the petition, like article, domestic industry, dumping, injury and causal link have been discussed in the relevant paras hereinbelow.
- 3. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in the relevant paras hereinbelow.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

- 4. The product under consideration in the present investigations are hot rolled coils, hot rolled sheets, hot rolled plates and hot rolled strips, classified under Chapter 7208, originating in or exported from Russia, Kazakhstan and Ukraine. Each of these items individually is being described as hot rolled product in this investigation.
- 5. It has been argued by some interested parties that each of hot rolled coils, sheets, plates and strips are different items and should not have been clubbed by the Designated Authority in this investigation. It has also been argued that boiler quality plates should be excluded from the scope of the present investigations as neither these items are being produced by the Indian industry nor the same is causing any injury to the domestic industry in view of significantly higher export price. As stated in the preliminary findings also, the Authority has treated each of the hot rolled product as a separate product. The Authority has merely initiated investigations jointly against imports of all these hot rolled products as the petitioners had alleged dumping of all these products from the subject countries, the production process for each of these items is largely the same upto a particular stage and these products are

commercially collectively known as hot rolled products. Hot rolled sheets, plates or strips merely involve certain additional production process. Coils can be used to make strips, plates or sheets. The issue of each of these hot rolled products being different assumes importance only from the view point of determination of dumping margin and injury margin. The Authority has, for the purpose of determination of dumping or injury margin, considered each hot rolled product as separate item for those exporters who have furnished necessary information separately. In case an exporter has furnished combined information, the Authority has had no choice but to assess such exporter collectively. The Authority has merely combined the four products for the purpose of assessment of injury, as stated in the preliminary findings, for the reason set out in the para relating to injury.

6. With regard to boiler quality plates (also called BQ plates), it has been argued that the same should be excluded from the scope of the present investigations in view of the following:
 - a) The price of HR plates and particularly of BQ plates is much higher than price of coils, sheets or strips;
 - b) The cost of production of plates and particularly of BQ plates is much higher than coils, sheets and strips;
 - c) BQ plates differs vastly even from the ordinary plates with regard to control on its chemistry, grain refinement, mechanical property, testing requirements, standard of performance;
 - d) BQ plates are not being produced by the Indian industry.

In view of the above, it has been argued that BQ plates should be excluded from the scope of the present investigations.

Authority's position:

While it is true that BQ plates differs from the ordinary HR plates, it cannot be denied that the basic property of the material remains the same, i.e., BQ plates are also hot rolled products. With regard to production of BQ plates in India, the Authority notes that the exporter and importers seeking exclusion of such plates themselves have enclosed evidence that these plates are being produced in India. Mere difference in cost of production or prices does not make the two products different. It merely calls for price adjustment for comparison purposes. The Authority, therefore, holds that the exporters or importers seeking exclusion of BQ plates imported from the subject countries have failed to substantiate their claim that like article is not being produced in India. It would, therefore, not be appropriate to exclude BQ plates from the scope of the present investigations. However, the Authority has made comparisons for the purpose of determination of dumping margin and injury margin considering like articles.

7. Petitioners, domestic industry and like article: The petition has been filed by M/s. Steel Authority of India Ltd. (SAIL) and Essar Steel Ltd. (referred to as Essar also in this notification) and is supported by M/s. Tata Iron &

Steel Co Ltd. (TISCO) and Lloyds Steel Industries Ltd. There are no other producers of the subject goods in India. The petitioners, therefore, satisfy the standing to file the present petition.

8. Arguments have been raised that TISCO and Essar are related companies within the meaning of Rule 2(b) and therefore, should be excluded from the purview of the domestic industry. The Authority, however, notes that none of the interested parties have disputed the preliminary findings that there is no evidence to suggest that Essar controls Steelco or that Steelco controls Essar or that both of them are controlled by a third company. With regard to TISCO, however, the Authority notes that Tata SSL is a subsidiary company of TISCO. TISCO is in a position to control Tata SSL, and, therefore, needs to be excluded from the purview of domestic industry.
9. The production of SAIL and Essar constitutes a major proportion of the domestic production of the subject goods in India. SAIL and Essar, therefore, form domestic industry within the meaning of the Rule 2(b).
10. With regard to like article, it has been argued that each of the hot rolled products is not a like article to any other hot rolled product. It has also been argued that each of the hot rolled products being produced by the domestic industry is not a like article to the hot rolled product being imported, originating in the subject countries. For instance, it has been argued that hot rolled plate is not a like article to hot rolled coils and hot rolled coils exported from the subject countries is not a like article to hot rolled coils produced by the domestic industry.

The Authority clarifies that mere joint initiation of these hot rolled products in the present investigations does not imply that the Authority has considered that hot rolled plate is a like article to hot rolled coils either for determination of dumping margin or for injury margin. Those exporters who have furnished separate information with regard to these products, such as Ispat Karmat, have been assessed separately for different products. However, in a situation where an exporter has not furnished relevant information separately, the Authority is prevented from assessing separate dumping margin for different goods, even though the Authority had requested separate information for each type/grade.

11. With regard to the arguments that each of the hot rolled product produced by the domestic industry is not a like article to the hot rolled products exported from the subject countries, the Authority notes that none of the interested parties have demonstrated that the two are not like articles with reference to parameters such as physical characteristics (size, chemical composition, raw material), manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification. Considering these parameters, the Authority finds that the goods produced by the domestic industry and the goods exported from the subject countries have characteristics closely resembling each other with reference to these parameters and there is sufficient evidence available that the two are technically and commercially substitutable and are substituted by the consumers.

12. In view of the foregoing, each of the hot rolled products, i.e., hot rolled coils, hot rolled sheets, hot rolled plates, and hot rolled strips produced by the domestic industry are being considered as a like article to hot rolled coils, hot rolled sheets, hot rolled plates and hot rolled strips respectively, imported originating in or exported from the subject countries within the meaning of the Rule 2(d). The Authority confirms preliminary findings with regard to domestic industry and like articles and confirms that SAIL and Essar constitute the domestic industry for the purpose of present investigations and that the goods produced by the domestic industry are like articles to the products under consideration.

D. **DUMPING**

13. The following exporters have been assessed separately for determination of separate dumping margins:

- Ispat Karmat
- JSC Severstal
- Novolipetsk Iron & Steel Corp.
- Zaporizhstal Joint-Stoc Co.
- Azovstal Iron & Steel Works
- Magnitogorsk Metallurgic Plant

14. The dumping was determined at the time of preliminary determination on the basis of the information furnished by the above mentioned exporters. None of the exporters except Novolipetsk Iron & Steel Corp. and Zaporizhstal Joint-Stoc Co. disputed provisional determination of dumping. However, a representative of these exporters had detailed discussions on the methodology adopted by the Designated Authority for determination of dumping and dumping margin in the preliminary findings. These exporters have not disputed the methodology adopted by the Authority in the preliminary findings after the discussions. The preliminary findings with regard to dumping in respect of these exporters is, therefore, confirmed.

15. With regard to Ispat Karmat, the Authority notes that the petitioners have disputed the claims of Ispat Karmat that the domestic sales are in the ordinary course of trade, whereas the exporter has sought to establish the same by arguing that the company has made profits and the sales in the home market are more than 200% of the exports to India. The petitioners have pointed out that Ispat Karmat and JSC Severstal have not furnished their cost of production and, therefore, the information filed by them should be disregarded. These exporters have, however, pleaded that the sales in the home market are in the ordinary course of trade, as the exporter has made profits and the sales are in substantial quantities. The Authority notes that total sales of Ispat Karmat in the home market was *** MT and total exports to India were *** MT. The exporter has claimed export price on the basis of average selling price of all exports to India, whereas the selling price in the home market is based only on *** MT, which is 5.49% of total domestic sales. No explanation is provided by the company for the different sales adopted by the company for determination of selling price. The sales in the home market are,

therefore, not 200% of export sales to India as claimed by the exporter. However, the selling price in the home market is based on *** MT, which is 13.84% of exports to India. The sales in the home market are, therefore, in substantial quantities. With regard to the profits made by Ispat Karmat and adjustment made by the exporter on account of negative goodwill, the Authority notes that the negative goodwill arose as the fair value of the assets acquired was higher than the cost of acquisition. The company has charged depreciation higher by an amount equal to the income shown on this account. In view of the above, the Authority confirm the preliminary findings with regard to dumping margin in respect of Ispat Karmat.

16. With regard to JSC Severstal, Russia, the Authority notes that the sales of the company in the home market is about 15.85% of total sales. Though the sales are in significant volumes, it has not been established by the company that the same are above cost of production. The company has claimed that it has made profit in 1996 and quarter 1 of 1997. However, the company has not furnished details of various items it has produced and sold in the relevant period and it is not clear from the information furnished whether the company exclusively carries activities relating to production and sales of Hot Rolled products. In view of the same, it is not feasible to determine normal value based on the prices at which goods have been sold by the company.
17. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory. Though it would be more appropriate to determine normal value based on the prices at which goods have been sold by the company in its home market, normal value is the price at which goods are sold for consumption in the exporting country. It would, therefore, still be appropriate in case the normal value is determined based on the prices at which goods have been sold for consumption in the home market of the exporter, particularly in view of insufficient information furnished by the company within the time limits prescribed and to be just and fair to other co-operating exporters. The Authority notes that the deficiencies in the response are in the nature of that information which the exporter has knowingly preferred to withhold and are clearly not acts of omissions.
18. In view of the above, it is considered appropriate to determine normal value for JSC Severstal based on information furnished by other co-operating exporters from Russia.
19. The Authority notes that in case of Ispat Karmat, the situation is different as the company is the sole producer of hot rolled items in Kazakhstan.
20. With regard to other exporters, there is no argument raised by any interested party. The preliminary findings are, therefore, confirmed with regard to other exporters from the subject countries.

21. The dumping margin comes as under:

SN	Name of the exporters	Dumping margin (% of export price)
IN CASE OF RUSSIA		
1.	JSC Severstal	113.37
2.	Novolipetsk Iron & Steel Corp.	78.37
3.	Magnitogorsk Metallurgic Plant	56.71
IN CASE OF KAZAKHSTAN		
4.	Ispat Karmat Hot Rolled Coils Hot Rolled Sheets	De-minimus 18.46
IN CASE OF UKRAINE		
5.	Azovstal Iron & Steel Works	8.96

E. INJURY AND CAUSAL LINK

22. As noted in the preliminary findings also, under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "...taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Further, it was noted by the Authority in the preliminary findings that for the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority may consider such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra. The list of the parameters is not exhaustive nor any of the parameters listed therein individually must show injury. The Authority may evaluate *relevant economic parameters*.

The effect of the dumped imports should be assessed, in accordance with para (vi) of the Annexure II to the Rules, in relation to the domestic production of the like article when available data permit separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers' sales and profits. If such separate identification of that production is not possible, the effects of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or range of products, which includes the like product, for which necessary information can be provided.

In the instant case, it is observed that separate classification of demand of each product would be difficult. Demand for hot rolled strips,

for instance, would be influenced by the supply/consumption of hot rolled coils. Further, production, capacity utilisation and sales volumes of a particular hot rolled products, say hot rolled strips would be influenced by production, capacity utilisation and sales volumes of hot rolled coils. It would be inappropriate to assess injury to the domestic industry in terms of individual hot rolled product. Injury to the domestic industry in totality for all hot rolled products has been considered more appropriate under the present circumstances. However, the Authority has considered selling prices separately for each product for the purpose of fair comparison.

23. The arguments raised by the interested parties on injury and causal link are as under:

a) The comparison of average sales realisation of ESSAR and SAIL done by the Authority in the preliminary findings is inappropriate.

Authority's position:

The comparison of average sales realisation of Essar and SAIL done by the Authority in the preliminary findings was based on the information furnished by these companies. These companies furnished information after preliminary findings, which was verified by the Authority to the extent deemed necessary. Additional information furnished by the two companies reveals that comparison of sales realisation of Essar and SAIL done by the Authority in the preliminary findings was inappropriate in view of the following reasons:

- i) Average sales realisation is an average of realisations from each of the hot rolled products. Sales realisation on Coils and Plates are significantly different. Since different quantities of sales in respect of these products are involved for the two companies, a comparison based on the average is bound to be inappropriate. As noted earlier, the Authority has adopted separate selling prices of different hot rolled products for the purpose of fair comparison;
- ii) average sales realisation of ESSAR included huge amounts of discounts in various forms given by the company. The company has given discounts on account of *****. The sales realisation shown by the company includes these amounts, because of which the realisation is much higher;
- iii) ESSAR has sold goods on ex-godown basis. Freight recovered by the company from the customers (in those cases where paid by the company on behalf of its customers) are also included in its sales realisation. As against this, sales realisation shown by SAIL is exclusive of any freight expenditure;
- iv) ESSAR has sold goods on significantly longer credit as compared to SAIL. The selling price is, therefore, inclusive of credit costs incurred by the company;
- v) Sales realisation of ESSAR includes finance expenses, such as ***** which the company has borne on behalf of its customers;

- vi) ESSAR had sold goods considering its competitive advantages compared to SAIL in terms of transportation costs. The company had higher realisation to the extent its customers would have had to incur expenditure on transportation of goods;
- vii) SAIL sells goods directly as also through stockyards. 70% of its sales are through stockyards. In case of sales through stockyards, SAIL has to bear transportation cost from its plants to stockyards. The sales realisation shown by SAIL is an average of sales realisation of sales made directly, through stockyards and exports made. Further, it is inclusive of all forms of hot rolled products sold by the company, and includes defectives and seconds.
- b) The production of ESSAR in 1995-96 was 680664 MT and not nil, as has been considered by the Authority.

Authority's position:

The Authority had considered production of Essar in 1995-96 as nil in the preliminary findings as per the information furnished by the company. The company had not claimed any production in 1995-96 in the petition. The company declared commercial production from 1st April, 1996. The company has, however, now furnished information that it had produced 680664 MT during the trial runs in 1995-96.

The Authority notes that what is relevant for the purposes of present investigations is the volume of goods produced by a company, whether it is declared as a trial production or as commercial production. Trial production also goes into the market and fetches a price. What is more important for the purpose of injury is the goods produced and sold by the constituents of the domestic industry, whether the production was a trial production or commercial production. Moreover, 680664 MT goods produced by the company represents 34% of its annual capacity and is a significant quantity to assess injury to the domestic industry. The Authority has, therefore, considered production during the trial runs as production for the purpose of injury assessment.

- c) The Authority should consider the domestic industry as it exists. All companies forming part of the domestic industry should be considered for injury determination. No Company forming part of the domestic industry should be examined in isolation, as has been done by the Authority.

Authority's position:

While it is appreciated that the Authority should consider the domestic industry as it exists and all companies forming part of the domestic industry should be considered cumulatively for injury determination, the argument of petitioners that no Company forming part of the domestic industry should be examined in isolation is not correct. Performance of individual companies forming part of domestic Industry is important to establish causal link between the dumped imports and injury to the domestic industry. In case some company forming part of the domestic

industry has not performed well for reasons other than dumping, the same cannot be attributed to dumping.

d) Increased availability from domestic sources was not the cause of injury to the domestic industry. Profitability of the domestic industry increased in 1995-96, in spite of increase in production in that year as compared to previous year. However, profitability declined significantly in investigation period as compared to previous year in spite of much lower increase in production as compared to previous year.

Authority's position:

Position of production of the domestic industry, its profitability and import prices from the subject countries is as under:

	change in 1995-96 as compared to previous year	change in 1996-97 as compared to previous year
Production (MT)	(+) 849925	(+) 411901
Profit (Rs. Crs.)	(+) ***	(-) ***

The Authority notes that the increase in production (and hence availability) of the subject goods in the Indian market did not affect the profitability of the domestic industry, as profits increased significantly in 1995-96 as compared to previous year in spite of significant increase in production. However, the profits declined significantly in investigation period as compared to previous year even though the increase in the production in the investigation period was lower than the increase in the same in the previous year. The significant decline in profitability in the investigation period was due to significant decline in the selling prices of the domestic industry in that year as compared to the previous year. The selling price of the domestic industry declined significantly in the investigation period as compared to the previous year as the import prices declined significantly, as noted elsewhere in this notification.

e) Increase in stocks with SAIL has not affected its profitability.

Authority's position:

The position of stocks with SAIL and its profitability is as under:

	change in 1995-96 as compared to previous year	change in 1996-97 as compared to previous year
Stocks (MT)	***	***
Profit (Rs. Crs.)	***	***
Cost of production (Rs. pmt)	***	***
Average sales realisation (Rs. pmt)	***	***

In view of the above, the Authority accepts the contention of the domestic industry that increase in stocks with SAIL has not affected its profitability. The increase in stocks have a bearing on inventory carrying costs and hence cost of production. However, profitability of SAIL declined in the investigation period as compared to the previous year primarily because its selling prices declined (in line with decline in the import prices) in spite of increase in its cost of production.

f) The CIF export price from subject countries is much lower compared to the export price from all other countries put together.

Authority's position:

Weighted average CIF export price from the subject countries and other than the subject countries were as follows:

	1995-96 Rs. pmt	1996-97 Rs. pmt
Subject countries	10703	10424
Other than subject countries	14652	13267

The Authority notes that the CIF export price from the countries other than the subject countries were significantly higher than the subject countries. It cannot, therefore, be held that imports from other countries caused material injury to the domestic industry.

g) Comparison of injury parameters in this case with other cases, such as PTA, metallurgical coke, etc. investigated by the Designated Authority would show that the domestic industry has suffered material injury in this case also.

Authority's position:

It would not be appropriate to compare this case with other cases, as each case is examined on the basis of specific parameters relevant to that industry. Injury assessment by the Authority is based on all the parameters collectively and cumulatively and not on some particular parameter.

h) The domestic industry has been forced to resort to various sales promotion schemes In fact, the domestic industry has been forced to invent newer forms of sales promotion schemes to keep the purchasers away from imports.

Authority's position:

The principles governing injury, while specifying certain economic parameters indicating injury to the domestic industry, clearly states that the list of the parameters indicated therein is not exhaustive nor any of the parameters listed therein individually must show injury. Parameters such as various sales promotion schemes, volume discounts, reimbursement of expenses of the purchasers, preferred customer discounts, etc. may also indicate injury. However, the domestic industry had neither claimed injury on account of any such factors nor furnished necessary information before the preliminary findings. In fact, the

Authority had requested the petitioners to furnish information with regard to net average sales realisation earned by the domestic industry from sale of its products. The net sales realisation is net of all such expenses as taxes and duties, discounts, commissions, various incentives given to the purchasers. Since necessary information was not furnished by the domestic industry before the preliminary findings, the Authority was prevented from analysing whether the domestic industry suffered injury on these accounts.

- i) Steel is so price sensitive that even small difference in the prices may result in loss of customer. The domestic industry has to, therefore, ensure price parity with the imported price. Imports at dumped price result in bench marking of prices, and it becomes difficult for domestic industry to realise better prices once prices are reduced by the exporters. The dumping from subject countries resulted in demands for same price levels even by those customers who had been traditionally purchasing from domestic sources and have not imported any material nor had any intentions to imports. Such purchasers have insisted on giving the same prices as are available to others who have resorted to imports so that their competitiveness is maintained. The industry has, thus, suffered injury not only from those customers who have imported material, but also from those who had to be offered lower prices in view of imports at dumped prices.

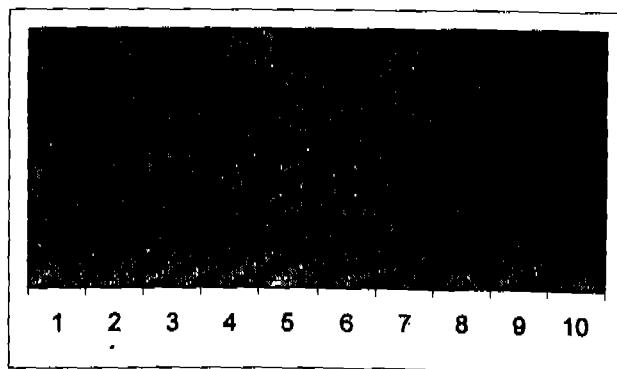
Authority's position:

The Authority appreciates the contention of the domestic industry. In the subject industry, even a single purchase at a lower price may force others to reduce the prices to match the lower prices offered by the exporter or loose the sale. Such lower price offered by even a single supplier to a single customer may, therefore, set a bench mark for other suppliers and customers and other suppliers may be left with an option of either loosing the market or reducing their prices effectively. Since curtailment of production may be economically more disadvantageous compared to selling at reduced prices, it can be expected that other suppliers would also reduce their prices or offer other incentives to the customers to retain them.

- j) The export price from the subject countries declined significantly. Imports from subject countries resulted in price undercutting in the Indian market. There is clear evidence that importers forced the domestic industry to reduce the selling prices in view of cheaper imports.

Authority's position:

Export price from the subject countries were as shown in the following graph:



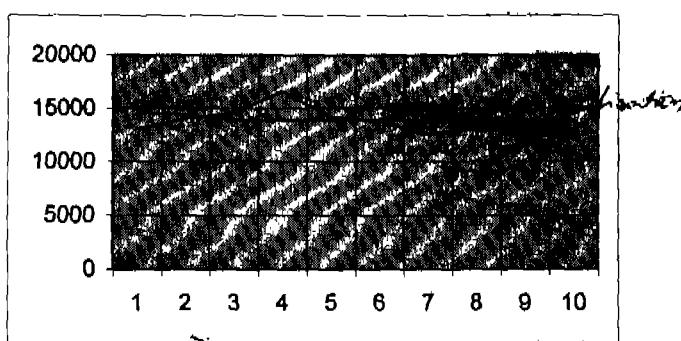
Note: The above shows export price in 1994-95, 1995-96 and export price in each of the month in the investigation period of 1996-97. The prices are in US \$ and Rs. per MT.

The Authority notes that there is no significant decline in the export price from the subject countries in the investigation period as compared to previous years. However, the export price declined significantly in the investigation period itself. Moreover, what is relevant for the purpose of injury to the domestic industry is the landed price of imports and not the CIF export price. The Authority has, therefore, compared the landed price of imports with the average selling price of the domestic industry, and the position is discussed in the following sub-para (k).

k) The landed price of imports from the subject countries were significantly below the selling prices of the domestic industry. Imports forced the domestic industry to sell below its fair selling price.

Authority's position:

Landed price of imports from the subject countries and net sales realisation are as shown in the graph below:



Note: The above shows landed value of imports and average sales realisation in 1995-96 and in each of the month in the investigation period of 1996-97.

The Authority notes that the landed price was higher than the selling price of the domestic industry in 1995-96. The same, however, declined

significantly in the investigation period. Further, the landed prices declined to such an extent in the investigation period that the same were below the selling prices of the domestic industry since July, 1996. The imports were thus undercutting the prices in the Indian market in the investigation period, forcing the domestic industry to reduce its prices. Further, the selling prices of the domestic industry were significantly lower than the fair selling price of the subject goods in India.

- I) In view of the manufacturing process involved for production of hot rolled products, the domestic industry has no choice but to optimise its production so as to minimise the incidence of fixed expenditure per unit of production, which is significantly higher in this kind of industry. Once produced, the industry has no choice but to sell the produce, even at the cost of reduced prices to avoid high inventories and their holding costs. The industry has to, therefore, make all out efforts to sell whatever it can and check imports. Had the Indian industry not resorted to various pricing schemes and price reduction measures, the imports would have increased significantly. Price effects, and not the volume effects, are true indicators of material injury in this kind of case.

Authority's position:

As discussed elsewhere, the domestic industry has a choice of either losing a customer or reducing its realisation once lower prices are offered by some other supplier. It is appreciated that losing the market involves curtailing the production, which would result in increase in the incidence of overhead expenditure per unit of production. This would lead to further deterioration and affect competitiveness of the domestic industry. The better choice before the domestic industry is to reduce the prices and keep the customer. The Authority is, therefore, inclined to agree with the petitioners that the domestic industry increased its production and sales at the cost of reduced selling prices in view of the lower prices offered by the dumped imports.

- m) Essar submitted that even though it could sell its produce, it had to offer increasingly higher credits to the customers. The average credit period of the company increased from **** days (1995-96) to **** days (1996-97). Significantly higher credit sales have had severe impact on the liquidity of the company and its ability of raise funds, and eventually results in increase in its cost of production. The increase in production and sales should, therefore, be considered in the light of these impacts on the company.

Authority's position:

With regard to longer credits offered by Essar, as pointed out elsewhere in these findings, sales on credit is also an indicator of injury. However, the onus to prove that the domestic industry has suffered injury on this account is on the domestic industry. While furnishing information on net average selling prices, the domestic industry did not indicate that it was forced to offer increasingly higher credits to retain the customers. The information was furnished subsequent to the preliminary findings, which was verified by the Authority to the extent deemed necessary. The information furnished by Essar shows that its average creditors for these

products and average outstanding balances for some of its major customers increased considerably.

n) Total imports from the subject countries constituted only 2.8% of the total demand in the country. Article 9(3) read in conjunction with Article 5(7) of the EC Basic Regulation provides that injury shall normally be regarded as negligible where imports concerned represents a market share of below 1%, unless such countries collectively account for 3% or more of the community consumption.

Authority's position:

Under the Indian Rules, volume of imports from a country is more than de-minimis in case the same is more than 3% of the imports of the like product, unless, the countries which individually account for less than three percent of the imports collectively account for more than 7%. In the instant case, the imports are more than de-minimis limits and, therefore, it cannot be held that the injury is negligible.

o) Imports from the subject countries declined in absolute terms in the investigation period as compared to previous year. Imports from subject countries declined relative to production as also consumption of the subject goods in India. There is, therefore, no injury suffered by the domestic industry from the dumped imports.

Authority's position:

It is factually incorrect that the imports from the subject countries have not increased in absolute terms. As observed by the Authority in the preliminary findings, the imports from the subject countries were 77827, 234147 and 191854 MT in 1994-95, 1995-96, and 1996-97. In fact, the imports were nil in the years 1992-93 and 1993-94 as per the information published by DGCI&S. While analysing injury to the domestic industry, the Authority is required to assess the trends of imports over a period of time and not with the immediate preceding year. The Authority, therefore, holds that imports have increased in absolute terms.

p) Landed value of imports as per the petition itself is higher than the average sales realisation from Russia and Kazakhstan. There is, therefore, no evidence of price undercutting from the dumped imports.

Authority's position:

The argument is factually incorrect. As already observed elsewhere, the landed value of imports was lower than the selling price in the investigation period. Imports from the subject countries were, therefore, resulting in price undercutting in the Indian market.

q) Imports from the subject countries have not resulted in any price suppression. The reason for inability of the domestic industry to increase the prices is lower selling prices of SAIL, which account for approx. 45% of the market share. Since the primary market player was selling at prices lower than the imports, imports cannot be said to have caused any price suppression in the market. Further, the increase in the cost of production is primarily because of Essar, whose cost of production is

higher. SAIL was able to price its product competitively in view of certain cost advantages.

Authority's position:

It would be incorrect to say that SAIL was selling at lower prices as compared to others. As discussed elsewhere, the terms and conditions of sale of SAIL and others, including Essar were different. Since the average sales realisation of Essar and SAIL is influenced by a number of factors, the Authority has analysed sales realisations of two companies in detail and has found that the sales realisations of the two companies are comparable. The Authority refrains from discussing further details in this regard as the same involves information which is confidential in nature.

It would also not be appropriate to say that a major player in the market would be selling at prices lower than competitors, particularly when the market is price sensitive. Even if it is accepted that the cost of production of SAIL is lower than others, it does not follow that it should be selling at lower prices merely because its costs are lower.

It is also not factually correct that the cost of production increased because of Essar. Cost of production of SAIL also increased in the investigation period as compared to the previous year. SAIL was, however, forced to reduce its prices, as it was suffering price undercutting from the imports, as shown in the table below:

SN	Parameter	1994-95	1995-96	1996-97
1.	Cost of production	***	***	***
2.	Average selling price	***	***	***

It is evident from the above that cost of production of SAIL increased over the years and in the investigation period. The selling price also increased over the years. The same however declined in the investigation period, and in fact, went below the cost of production in some of the months in the investigation period. Imports from the subject countries have, therefore, resulted in price suppression in the Indian market.

r) Stockyard prices of SAIL cannot be compared with the landed prices, as the stockyard prices are inclusive of inland freight from the factory to the stockyard as also storage & handling charges, whereas the landed prices are exclusive of these charges. Only the ex-factory prices of SAIL should be considered for comparison with landed prices.

Authority's position:

The Authority normally considers landed price of imports at port level and selling prices of the domestic industry at ex-factory level. However, it cannot be denied that the purchasers would place their orders considering landed cost of the goods at their godown. Ideally, therefore, the Authority should consider landed price of imports at customers godown to examine whether there was any price undercutting or price suppression or price depression. Since it is difficult to examine landed prices at the customers' godown, the Authority normally does effect comparisons at ex-port and ex-factory level. However, in a situation like the present, SAIL as a major market player offers goods at various

stockyards located at several places in the country. SAIL bears transportation cost upto these godowns. These stockyards are in the nature of godowns maintained by the producers at the plants. Transportation cost from these godowns to customers' godown is borne by the customers. Customers, therefore, ideally have a choice of buying either from SAIL's nearby godown or from import at the nearest port. It may not, therefore, be inappropriate to compare the selling prices of SAIL at stockyard level with the landed price of imports at port level, though it is not denied that actual transportation costs to be incurred by the customers may vary whether comparison is done on ex-factory basis or ex-stockyard basis. The Authority has, however, as noted elsewhere in these findings, compared the average net realisations of Essar and SAIL in detail and has found that the two are in the same region. The Authority has, therefore, compared net sales realisation of Essar with landed price of imports.

- s) Production, capacity utilisation, sales volumes, market share held by the Indian industry does not indicate that domestic industry has suffered any injury.

Authority's position:

All economic parameters relating to the domestic industry need not indicate injury nor can one or several of these economic parameters necessarily give decisive guidance with regard to injury suffered by the domestic industry. Examination of the impact of dumped imports on the domestic industry includes evaluation of *all relevant economic factors*. Cumulative assessment of all relevant economic factors can only indicate whether the domestic industry has suffered material injury.

- t) SAIL has always maintained high level of inventory. Also, the increase in inventory by SAIL is on account of entry of Essar in the market.

Authority's position:

As held by the Authority in the preliminary findings, the increase in the inventory with SAIL does not appear to be on account of dumped imports. However, as noted in the previous para, *all economic parameters affecting the domestic industry need not show injury*.

- u) Landed price of BQ plates being much higher than the alleged CIF export price relied upon by the petitioners, there can be no dumping or injury to the domestic industry from the imports of BQ plates.

Authority's position:

Dumping is the difference between the export price of the subject goods and normal value of the like goods. It would be inappropriate to compare landed value of BQ plates with the average CIF price claimed by the petitioner to arrive at existence of dumping, the only relevant factors being the normal value and export price of the subject goods. For injury, the landed price of BQ plates and fair selling price of like article produced by the domestic industry are the relevant parameters. The Authority has compared the landed value of BQ plates with the fair selling price of BQ plates for the domestic industry and has found that the landed value is significantly lower than the fair selling price.

v) Government of India has imposed 4% special additional duty on all imports, which has reduced the injury, if any, to the domestic industry. Further, the Indian Rupee has depreciated by about 20% from April, 1997 till date, which has also reduced the injury, if any, to the domestic industry.

Authority's position:

The Authority does not consider post investigation period factors. However, the Authority has recommended duty considering the landed value of imports. The determination of landed value of imports has also been defined in the relevant para in these findings.

w) As TISCO has been excluded from the purview of the domestic industry, the imports made by the related company should be reduced from total imports from the subject countries.

Authority's position:

The argument is unsupported by law and therefore, is liable to be rejected.

x) Imports from the subject countries would be less if the imports under Duty Exemption Entitlement Schemes are excluded.

Authority's position:

The argument is unsupported by law and therefore, is liable to be rejected. Moreover, injury may be caused by such imports, as these may set the bench mark prices, which the domestic industry may have to offer to even those purchasers who have been traditionally buying from domestic sources and who do not have any intention of imports (though such companies are also free to import under the relevant regulations of the Government of India) to keep their competitiveness. Further, as noted elsewhere in these findings, price effect and not the volume effect is the primary form of injury suffered by the domestic industry from the imports from the subject countries.

y) The Authority has not quantified injury in the preliminary findings and has merely found that the domestic industry has suffered some injury.

Authority's position:

The Authority is required to give its findings in affirmative or otherwise with regard to the injury to the domestic industry. It is not required under the law to quantify the injury. The Authority finds that the domestic industry has suffered material injury.

24. In view of the foregoing, the Authority finds that the domestic industry has suffered material injury from the dumped imports and the same is evidenced from the following:

a) Imports from the subject countries forced the domestic industry to reduce its selling prices, significantly below a level which would have provided a fair return to the domestic industry on the investments made by it.

- b) Imports from the subject countries were undercutting the prices of the domestic industry, particularly towards the end of the investigation period. The Authority notes that selling prices were even below the average cost of production, resulting in financial losses to the domestic industry.
- c) Imports from the subject countries at reduced prices forced the domestic industry to introduce newer forms of financial considerations to keep their customers. The domestic industry was forced to offer such schemes even to those customers who otherwise did not import any material.
- d) The domestic industry was prevented from increasing its selling prices in the investigation period, which was legitimate in view of increase in cost of production.

In view of the foregoing, the Authority holds that the domestic industry has suffered material injury from dumped imports.

FINAL FINDINGS

25. The Authority, after considering the foregoing, concludes that:

- a) Hot rolled coils, plates, sheets, and strips originating in or exported from Russia, Kazakhstan and Ukraine have been exported to India below their normal value, except for hot rolled coils originating in Kazakhstan, resulting in dumping;
- b) the domestic industry has suffered material injury;
- c) the injury has been caused to the domestic industry by the exports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

26. The Authority confirms the preliminary findings and recommends imposition of definitive anti-dumping duties on all imports of the product under consideration falling under custom sub-heading 7208, as specified in the para relating to product under consideration, originating in or exported from the subject countries, except for hot rolled coils originating in or exported from Kazakhstan. The anti-dumping duty shall be the difference between amount mentioned in column 3 and the landed price of imports per MT, subject to a minimum of Rs. 481 per MT.

SN	Item Description	Amount (Rs. per MT)
1	2	3
1.	Hot Rolled Coils	14300
2.	Hot Rolled Strips/Sheets/Plates	15000
3.	Boiler Quality Plates	22000

27. The Authority has recommended the same amount for all the exporters in view of significantly higher dumping margins involved, no information furnished by the exporters with regard to the CIF export price and in view of the other facts and circumstances of this case.
28. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
29. Subject to above, the Authority confirms the preliminary findings dated 17.6.1998.
30. An appeal against this order shall lie to the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act supra.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority & Addl. Secy.